



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहा गया है। जिन्हें यह प्राप्त है, वे मनुष्य जन्म का मूल्यांकन करना सीखें।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली | वर्ष 25 | अंक 47 | 26 अगस्त - 01 सितम्बर, 2024 | प्रत्येक सोमवार | प्रकाशन तिथि : 24-08-2024 | पेज 16 | ₹ 10 रुपये



अरति की निवृत्ति करने वाला हो सकता है मेधावी : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

18 अगस्त, 2024

श्रुत का ज्ञान दिलाने वाले युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मेधावी के पास प्रतिभा, ग्रहण शक्ति, धारण शक्ति होती है। ऐसे व्यक्ति पुरुषार्थ करते हैं, तो वे ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। ज्ञान चेतना को आवृत्त करना ज्ञानावरणीय कर्म है। ज्ञानावरणीय स्वयं पाप कर्म है, पर आत्मा के पाप लगाना यह ज्ञानावरणीय कर्म नहीं करता।

ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होता है, तो ज्ञान चेतना अनावृत्त हो जाती है। ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षयोपशम सभी संसारी प्राणियों में होता है। क्षयोपशम से आदमी अतीन्द्रिय ज्ञानी भी बन सकता है। ज्ञानावरणीय कर्म का सीधा संबंध ज्ञान के साथ है, आचार के साथ नहीं।

चातुर्मास का समय है, चारित्रात्माएं एवं समगियां स्वाध्याय में समय का



नियोजन करें। आगम का स्वाध्याय साधु की खुराक है, इससे संयम को पोषण मिलता है। गुरुदेव तुलसी तो खड़े-खड़े स्वाध्याय करते थे। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से नए-नए तत्वों की जानकारी मिल सकती

है, नई बात सामने आ सकती है, प्रज्ञा व औत्पत्तिकी बुद्धि का विकास हो सकता है।

जो अरति की निवृत्ति करता है वह मेधावी हो सकता है। साधु के संयम के प्रति उत्साह बना रहे। आज चतुर्दशी

हाजरी का दिन है, चतुर्दशी धार्मिक तिथि के रूप में प्रतिष्ठित रहे। हमारा मेधावीत्व पुष्ट रहे।

संयम व महाव्रतों के प्रति सजगता बनी रहे। हम संयम रूपी हीरे के पहरेदार बने रहें। मोहनीय कर्म

कहीं आस-पास आकर इस हीरे का अपहरण न कर ले। रत्नाधिक चारित्रात्माएं छोटी चारित्रात्माओं को प्रेरणा प्रदान करती रहे।

पूज्यवर ने हाजरी वाचन कराते हुए प्रेरणा प्रदान करवाई। लेख पत्र का वाचन नवदीक्षित मुनि वीतराग कुमार जी एवं मुनि संयमकुमार जी ने किया।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने अपने उद्धोधन में कहा श्रेष्ठ इंसान बनने की महत्वपूर्ण चीज है- मैं मन की शांति को प्राप्त करूं। इससे मन की स्वस्थता रह सकती है। जीवन में अशांति, तनाव अनेक प्रकार से हो सकता है। धन से दवा, किताब, बड़ा घर या अन्य कोई चीज प्राप्त की जा सकती है पर स्वास्थ्य, ज्ञान, आराम या शांति नहीं मिल सकती। जिसने अपनी इच्छाओं का त्याग कर दिया है वह शांति को प्राप्त कर सकता है। कषाय अशांति का कारण है हम कषाय मुक्ति की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मनुष्य जन्म ही मोक्ष का द्वार है : आचार्यश्री महाश्रमण

महासभा द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न सम्मान एवं पुरस्कार

सूरत।

17 अगस्त, 2024

अध्यात्म साधना के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमीवर्षा करते हुए फरमाया कि आचार्य आगम के दूसरे अध्ययन में बताया गया है कि हमारे जीवन में एक-एक क्षण का महत्व है।

मनुष्य का जीवन अपने आप में एक अच्छा अवसर होता है। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव जीवन को श्रेष्ठ बताया गया है क्योंकि मोक्ष की प्राप्ति मनुष्य जीवन से ही हो सकती है। अनुत्तर विमान के देव भी सीधे मोक्ष नहीं जा सकते हैं, उन्हें भी मानव जीवन लेना पड़ता है। वे तो सिद्ध लोक के नजदीक

रहते हैं पर मनुष्य जन्म ही मोक्ष का द्वार है, दूसरा कोई द्वार नहीं है।

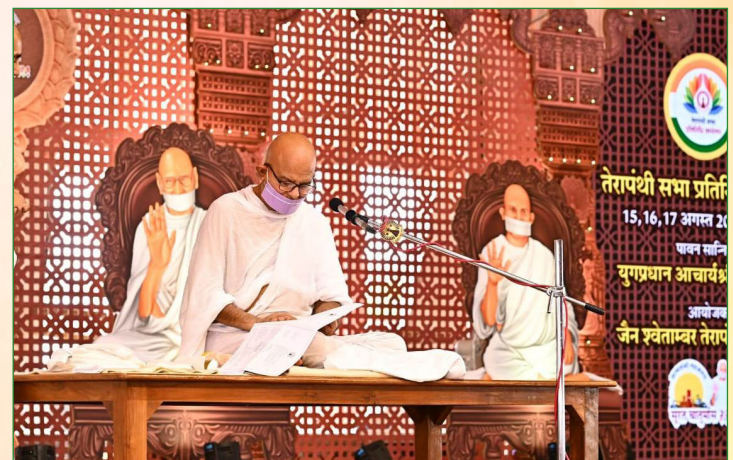
मानव जीवन अपने आप में एक अवसर है। मानव जीवन में संयम को भी ग्रहण किया जा सकता है। व्यक्ति युवावस्था में संयम जीवन के लिए उद्यत हो जाता है और लंबा संयम जीवन चले तो बहुत बड़ी बात हो जाती है। हमारे अनेक आचार्य एवं साधु-साध्वी बचपन में ही दीक्षित हो गए थे। चारित्रात्माओं में सबसे कम उम्र में दीक्षित होने वाली महासती गुलाबां जी थी, वे तो एक कीर्तिमान हैं।

हमारा जीवन संयम विहार है। यहां सूरत में तपोविहार भी चल रहा है, कितने-कितने लोग तपस्या का प्रत्याख्यान कर रहे हैं। कितने लोग उपासना में समय लगा रहे हैं। व्यवस्था करने वालों का

भी उन्हें सहयोग मिल जाता है तो सेवा करने में सुविधा हो जाती है। चातुर्मास भी एक क्षण है, इसका सेवा-साधना से लाभ उठाना अच्छी बात हो सकती है।

एक चातुर्मास में इतनी चारित्रात्माओं की उपस्थिति होना विशेष बात है। शरीर जब तक सक्षम है, धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा कर लेनी चाहिए। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की जितनी अनुकूलता हो, इस क्षण का लाभ उठा लेना चाहिए। कहा गया है- हे पंडित! तुम समझदार हो, समय का मूल्यांकन कर उसे सार्थक बनाने का प्रयास करो। धर्म साधना के लिए समय निकाल लेना विशेष बात होती है।

शनिवार की सामायिक का भी महत्व है। प्रवचन सुन लेना और सामायिक कर लेना भी क्षण को सार्थक बना लेना होता



है। भगवान महावीर और आचार्य श्री भिक्षु में अनेक समानताएं हैं। पाणिग्रहण हुआ, संतान हुई, युवावस्था में दीक्षा ली, जीवन के आठवें दशक में महाप्रयाण को प्राप्त हो गए, जन्म का दिन भी शुक्ला त्रयोदशी

है। उन्होंने संयम विहार में उद्यत होकर संयम साधना में जीवन लगा दिया। हम सभी क्षण का धार्मिक आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास करें।

(शेष पेज 10 पर)



जवानी पर रहे धर्म का अंकुश : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

16 अगस्त, 2024

तीर्थकर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगम की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में यौवन अवस्था महत्वपूर्ण अवस्था होती है। युवा अवस्था में बहुत कार्य किया जा सकता है। परिवार, समाज, राजनीति में काम किया जा सकता है।

अध्ययन होने के बाद जवानी का उपयोग खुले आकाश में दौड़ लगाने में होना चाहिए। जवानी की अवस्था में रास्ता गलत ले लिया जाए तो यह अवस्था पतन के गर्त में ले जाने वाली हो सकती है, युवावस्था अनर्थकारी हो सकती है।

धन संपत्ति सार्थक भी हो सकती है, लौकिक कार्यों में उत्थानकारी हो सकती है। धन-संपत्ति यदि दुर्व्यसन- विलासिता में लगती है तो वह धन निरर्थक भी हो सकता है। किसी को प्रभुत्व सत्ता मिल जाए, सत्ता का भी दुरुपयोग हो सकता है तो सेवा में सदुपयोग भी हो सकता है। सत्ता में आकर जो सेवा



करता है तो सेवा का सदुपयोग भी हो सकता है।

अविवेकता भी अनर्थकारी होती है। युवा अवस्था, धन-संपत्ति और सत्ता के साथ यदि विवेक जुड़ जाए तो यह सदुपयोगी हो सकती है। अवस्था बीत रही है, बुढ़ापा आ रहा है, जवानी जा रही है, जवानी का धार्मिक- आध्यात्मिक उपयोग भी करें। परिवारिक

जवाबदारी के साथ धार्मिक क्रिया भी करें। परिवार के साथ शनिवार की सामायिक तो हो ही जाए, नमस्कार महामंत्र का जप भी होता रहे। जवानी पर धर्म का अंकुश रहे, यह निरंकुश हो गई तो गलत राह पर जा सकती है। जवानी का बढ़िया उपयोग करें, अवस्था आने के बाद जीवन में मोड़ भी

लिया जा सकता है। धर्म की दृष्टि से आगे बढ़ें, खान-पान का ध्यान रखें। युग के साथ चलें, पर जमाने को अपने अच्छे सिद्धांत पर चलाने का भी प्रयास करें।

जवानों के लिए संदेश है कि जागरूक रहो। अच्छे संस्कारों में रहो। गया हुआ समय पुनः लौटता नहीं है। जवानी के मोती को खोना नहीं है, उसको अच्छा जीने का प्रयास करें। ऊपरले आख्यान में पूज्यप्रवर ने मुनि गजसुकुमाल के प्रसंग को प्रस्तुत किया।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने उद्धोधन में कहा कि तीर्थकरों के लिए कहा गया है- रज-मल से मुक्त। अर्हत् हमारे आदर्श होते हैं। आत्मा से युद्ध करें तो आत्मा रज-मल से मुक्त बन सकती है। जीव स्वयं कर्मों का कर्ता है, स्वयं ही भोगता है और कर्मों को तोड़ता है।

पाप की कमाई में सब हिस्सेदार बन सकते हैं पर पाप का फल स्वयं को ही भोगना पड़ता है। हमें इन पाप कर्मों को तोड़ने का प्रयास करना है, उसके लिए आत्मा को पुरुषार्थ करना होगा।

(शेष पेज 10 पर)

वीतराग पथ ही हमें त्राण और शरण दे सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

15 अगस्त, 2024

भारत गणराज्य का 78वां स्वतंत्रता दिवस। जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा का त्री दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन। कर्मों की गुलामी से मुक्ति दिलाने वाले परम पावन परम पुरुष आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया की आयारो आगम में कहा गया है आगम में ऐसी बातें प्राप्त होती हैं जिन पर मनन करने से वैराग्य प्राप्त हो सकता है। आदमी वृद्धावस्था को प्राप्त करता है। कई वृद्ध सम्मान को प्राप्त करते हैं, कई सम्मान को प्राप्त नहीं भी करते हैं।

वृद्धाश्रम में वृद्धों को रखने के दो पक्ष हैं- परिवार वालों से उनकी सेवा नहीं की जाती है, सेवा करने से छुटकारा पाने का उपाय होता है। कोई वृद्ध अपनी संतानों के पास नहीं रहना चाहते हैं तो संतान उन्हें उनकी सेवा के लिए वृद्धाश्रम का प्रयोग करती है।

हमारे धर्मसंघ में जैन विश्व भारती में चित्त समाधि केंद्र हो, वहां वृद्धों को चित्त समाधि मिल सकती है। वहां धार्मिक साधना का भी मौका मिल सकता है। परिवार वाले भी चिंतन मुक्त हो सकते हैं। धार्मिक स्थान का उपयोग वृद्ध-अवृद्ध को भी मिलता रहे। चित्त समाधि केंद्र सन्यास आश्रम जैसा रूप बन सकता है। महासभा और जैन विश्व भारती भी

इस पर चिंतन कर रही है। वृद्धावस्था में कहीं-कहीं परिवार से पूरा सम्मान न मिले तो मन में असमाधि हो सकती है। इसके लिए चित्त समाधि केंद्र में रहकर सन्यास आश्रम सा जीवन बिता सकते हैं। हमारे यहां साध्वियों के लिए एक चित्त समाधि केंद्र बीदासर में है।

कहा गया है कि तुम्हारे मित्र और परिवारिक जन तुम्हें त्राण और शरण नहीं दे सकते। तुम भी अपने स्वजनों को त्राण और शरण नहीं दे सकते। सेवा दे सकते हैं, पर बुढ़ापे से नहीं बचा सकते। मौत से कौन बचा सकेगा? यह अत्राणता है, अशरणता है। कोई किसी का त्राण और शरण नहीं है, यह निश्चय नय की बात है। व्यवहार में त्राण और शरण हो सकती है, एक-दूसरे की सेवा हो, एक दूसरे के त्राण और शरण बन सकते हैं। दुर्घटना हो जाती है, व्यक्ति चला जाता है, तब कोई किसी को नहीं बचा सकता। ऐसी अवस्था में धर्म करें, अध्यात्म की शरण में आएं। वीतराग पथ ही हमें त्राण और शरण दे सकता है।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में पूज्य प्रवर ने फरमाया कि 15 अगस्त 1947 का दिन भारत के लिए एक गौरव का दिन है। भारत स्वतंत्रता में जी रहा है, स्वतंत्रता में जीना अपना आनंद होता है। भारत के पास संत संपदा है, यह संपदा भारतीय की निधि है। संतों से सदुपदेश मिलता है तो आत्म कल्याण की दिशा में आगे बढ़



सकते हैं। स्वतंत्र होने पर भी संविधान की परतंत्रता और अनुशासन रहना चाहिए। संविधान का पालन होता है तो संविधान सुरक्षित रह सकता है।

भारत में शांति रहे, राजनीति में भी नैतिकता रहे। अणुव्रत के नियमों से भी शांति रह सकती है। अहिंसा और नैतिकता के साथ समीक्षा भी होती रहे। भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है, यह स्वतंत्रता होना भी अच्छी बात है। बाल पीढ़ी में अच्छे संस्कार आएं, युवा पीढ़ी नशा मुक्त रहे। वृद्धों के अनुभव का भी अच्छा उपयोग हो सकता है। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी

ने फरमाया कि आज जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का प्रतिनिधि सम्मेलन होने जा रहा है। महासभा प्रगति कर रही है, स्वयं में लगा हुआ व्यक्ति निष्पत्ति ला सकता है।

अग्रिम पंक्ति में बैठे रहने वाला व्यक्ति स्वयं पुरुषार्थ करता रहे तो संस्था आगे बढ़ सकती है। महासभा सारे कार्य समीक्षा पूर्वक कर रही है, चिंतन के साथ निर्णय होता है, तभी महासभा प्रगति कर रही है। महासभा के कार्यों में संघहित प्रमुख है।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के प्रतिनिधि सम्मेलन के मंचीय कार्यक्रम में

महासभा अध्यक्ष मनसुख लाल सेठिया ने सम्मेलन के प्रारंभ की घोषणा की एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। आपने महासभा द्वारा किए जाने वाले आयामों की जानकारी दी।

महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि विश्रुतकुमार जी ने महासभा की गति प्रगति के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

पूज्यप्रवर ने मुनि निकुंजकुमारजी को 31 दिन की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया



श्रावक की ग्यारहवीं प्रतिमा का स्वीकरण

दक्षिण मुंबई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के शिष्य मुनि कुलदीपकुमार जी के सान्निध्य में प्रतिमाधारी तप आराधक 'अणुव्रत गौरव' डालचंद कोठारी के ग्यारहवीं प्रतिमा एवं नवीन कोठारी के मासखमण प्रत्याख्यान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। डालचंद कोठारी मुंबई के प्रथम श्रावक हैं, जिन्होंने 10 प्रतिमा पूर्ण कर ग्यारहवीं प्रतिमा स्वीकार की।

शुभ मुहूर्त में 11वीं प्रतिमा का प्रत्याख्यान मुनि कुलदीपकुमार जी के मुखारविंद से करवाया गया। साथ ही दादर से तपस्वी नवीन कोठारी के 28 की तपस्या का प्रत्याख्यान भी करवाया गया। दक्षिण मुंबई महिला मंडल ने

सुमधुर गीतिका से तप की अनुमोदन की। मुनि कुलदीपकुमार जी ने उद्बोधन देते हुए कहा - भगवान महावीर ने गृहस्थों के लिए साधना की दृष्टि से जो आचार संहिता दी है, उसमें साधक जब साधना के उच्च शिखर का आरोहण करता है तो वह श्रावक-प्रतिमा को स्वीकार करता है।

श्रमणोपासक रिछेड़ निवासी मुंबई प्रवासी डालचंद कोठारी ने श्रावक की 11वीं प्रतिमा अंगीकार कर अपनी साधना को सौरभमय बनाया है। मुनि मुकुलकुमार जी ने कहा- 11वीं प्रतिमा धारण करने का तात्पर्य है श्रावकत्व के शिखर पर पहुंच जाना। श्रावक डालचंद कोठारी साधना की गहराई को प्राप्त कर अपना उध्वारोहण करें। तपस्वियों की

अनुमोदना के स्वर में पारिवारिक सदस्यों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कोठारी परिवार ने गीतिका प्रस्तुत की। महासभा से किशन डागलिया, महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, मुंबई सभा अध्यक्ष माणक धींग, दक्षिण मुंबई सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया, महिला मंडल अध्यक्ष वनिता धाकड़, उपासक अशोक बरलोटा, दादर सभा से गणपत मारु, एल्फिंस्टन से निर्मल भंसाली ने अपने वक्तव्य के द्वारा उनके तप की अनुमोदना की। निवर्तमान सभा अध्यक्ष गणपत डागलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

भिक्षु दर्शन को समझकर आध्यात्मिक पथ पर बढ़ें आगे

हैदराबाद।

'शासनश्री' साध्वी शिवमालाजी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा निर्देशित भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात विजय गीत का संगान भिक्षु प्रज्ञा मंडली द्वारा प्रस्तुत किया गया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेषुप के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सांखला ने किया। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने सभी का स्वागत करते हुए आचार्य भिक्षु के जीवन पर प्रकाश डाला। सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने सभी संघीय संस्थाओं के तरफ से तेषुप को कार्यक्रम आयोजन करने पर बधाई एवं मंगलकामनाएं प्रेषित की। साध्वी अमित रेखा जी ने कहा कि संपूर्ण समाज को आचार्य भिक्षु के जीवन से प्रेरणा लेकर आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन संघर्षों से भरा था पर उन्होंने

संयम के पथ को कभी नहीं छोड़ा ठीक उसी प्रकार हम भी संयम के मार्ग को नहीं छोड़ना चाहिए। तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों ने आचार्य भीखण जी के जीवन के विभिन्न प्रेरक प्रसंगों को एक नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मुमुक्षु मानवी आंचलिया का सभी संघीय संस्थाओं द्वारा अभिनंदन किया गया एवं आध्यात्मिक मंगलकामनाएं प्रेषित की गई। मुमुक्षु मानवी आंचलिया ने अपने वक्तव्य में सभी को विभिन्न परिस्थिति में समभाव रहने की प्रेरणा दी। साध्वी अर्हमप्रभाजी एवं साध्वी रत्नप्रभाजी ने मुमुक्षु के प्रति मंगलकामना प्रेषित की।

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन के महत्वपूर्ण बिंदुओं को उजागर करते हुए उन्हें अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री ने मुमुक्षु के प्रति शुभेच्छा प्रेषित करते हुए हैदराबाद श्रावक समाज से ज्यादा से ज्यादा लोगों को वीतराग पथ पर बढ़ने की प्रेरणा दी। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया।

राष्ट्रहित के लिए अणुव्रत का व्यापक प्रचार प्रसार करना अत्यन्त जरूरी

नई दिल्ली।

गांधी प्रतिष्ठान भवन राष्ट्रहित चिंतक मंच के द्वारा स्वतंत्रा दिवस पर एक संगोष्ठी का आयोजन साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में रखा गया। साध्वी कुन्दनरेखा ने उस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा- स्वतंत्रता मानव मात्र का जन्म सिद्ध अधिकार है।

इसके बावजूद स्वतंत्रता के सही मायने यदि समझ में आ जाये तो युग की धारा को बदला जा सकता है।

साधिक 75 वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी ने दुनियां के सम्मुख अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया था। छोटे-छोटे नियमों से आवद्ध यह आन्दोलन नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करता है। इंसान को इंसान की पहचान कराता है। जीने की कला सिखाता है।

स्वतंत्रता अर्थात किसी का भी अहित किए बिना, नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करता हुआ मनुष्य अपने मानवीय मूल्यों को स्थिर रखता हुआ आगे बढ़ाया है। आवश्यक है राष्ट्रहित के लिए उसका अत्यधिक प्रचार और प्रसार हो।

राष्ट्रहित चिंतन मंच के द्वारा यह आयोजित संगोष्ठी निष्पत्ति के कगार पर पहुंचेगी। मानव में मानवीय मूल्यों को स्थापित कर भारत भूमि में अध्यात्म की ऊचाईयों को स्पर्श करेगी।

इस संगोष्ठी का प्रारंभ कन्याओं के स्वतंत्रता गीत से हुआ। कार्यक्रम का संचालन संजय भाई ने किया। इस संगोष्ठी में मुख्य रूप से आयुर्वेदाचार्य

छोटे-छोटे नियमों से आवद्ध यह आन्दोलन नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करता है। इंसान को इंसान की पहचान कराता है। जीने की कला सिखाता है।

डॉ. धर्म सिंह कौशिक, दिल्ली नागरिक सुरक्षा के प्रभारी सुमेर बल्हारा विद्याभारती के अमरदीप पर्यावरण विद् मोनू चौधरी, कवि रजनीश शर्मा, धनश्याम निरंकारी, हंसलोक आश्रम के विपिन मंडल, पंजाब के पूर्व प्रिंसपल राजेश सेजवाल, योगाचार्य इन्द्रजीत विशारद, अभिनेता बसंत कुमार, मीडियाकर्मी मनोज कुमार थे।

द क्रिएटिव टैलेंट डॉस एकेडमी के बच्चों ने अणुव्रत गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। विजय सिगला प्रिंसपल ने 22 विषयों में एम. ए. कर नया रिकॉर्ड दर्ज किया। वे भी उपस्थित थे। संचालन राजेश कश्यप, विनोद आर्य ने किया। साध्वी कल्याणयशा ने 'शांति का संदेश' गीत का सुमधुर संगान किया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा -अणुव्रत एक ऐसा अभियान है जो जाति, लिंग, भेद से उपर उठकर मानव को सही रास्ता दिखता है। आत्मबल को जगाता है और मनुष्य में मनुष्यता होने का विवेक जगाता है।

समृद्ध राष्ट्र योजना कार्यक्रम आयोजित

गंगाशहर। समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर ने अर्हम इंग्लिश एकेडमी स्कूल में कार्यक्रम किया।

कार्यकारिणी सदस्य रुचि छाजेड़ ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। मंडल उपाध्यक्ष प्रेम बोथरा ने 'क्रोध नहीं सहनशील बनें' विषय पर बच्चों को कहानियों के माध्यम से बहुत ही अच्छी तरीके से समझाया। जयश्री डागा ने बच्चों को व्यायाम, सरिता आंचलिया ने बच्चों उद्घोष करवाए। स्कूल के प्रिंसिपल सुरेन्द्र डागा ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

जैसा मित्र वैसा चरित्र - मित्रता दिवस पर आयोजित हुई फ्रेंड्स समिट

पीतमपुरा, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल उत्तर दिल्ली के तत्वावधान में फ्रेंडशिप डे पर फ्रेंड्स समिट कार्यक्रम विशाल उपस्थिति में आयोजित हुआ।

साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा रिश्तों की दुनिया में दोस्ती का रिश्ता बड़ा लाजवाब होता है। मित्र एक ऐसा नगीना है जिसकी चमक के सामने सारे रिश्ते फीके लगते हैं।

मित्रता मोमबत्ती की तरह होनी चाहिए, जब बत्ती जलती है तो मोम पिघलता जाता है। ठीक वैसे ही जब मित्र तकलीफ में हो तो दोस्त ऐसा

हो जो मित्र की तकलीफ को अपनी तकलीफ माने। मित्रता ताले की तरह होनी चाहिए, ताला टूट सकता है पर चाबी नहीं बदलता। मित्र भी वही होता है, कोई भी परिस्थिति आ जाए पर मित्र नहीं बदलता।

साध्वीश्री ने आगे कहा जैसा मित्र वैसा चरित्र, या जैसा चरित्र वैसा ही मित्र। सुदामा एवं कृष्ण की दोस्ती आज के युग में नजीर है। दोस्त ऐसा हो, जो दुःख-सुख में हमेशा साथ खड़ा रहे। निश्चय नय से तो हमारी आत्मा ही हमारी परम मित्र है, आत्मा की रक्षा करना हमारा परम दायित्व है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने 'फोर पी' की चर्चा करते हुए कहा- पॉजीटिव,

परपजफुल, पीसफुल एवं प्रजेन्स ऑफ माइण्ड वाले व्यक्ति से दोस्ती करें। वो स्वयं भी उन्नति करेगा एवं आपको भी प्रगति पथ पर अग्रसर करेगा।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने 'सच्चा मित्र कौन?' विषय पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा- धर्म हमारा सच्चा मित्र है, जो हमें दुर्गति से बचाता है एवं सद्गति का मार्ग दिखता है।

साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। महिला मंडल की बहनों ने हैप्पी फ्रेंडशिप डे गीत का संगान कर परिषद् को भावविभोर कर दिया।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने मंच का कुशलतापूर्वक संचालन किया।



साध्वीश्री लावण्यश्रीजी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया

● साध्वी अणिमाश्री ●

जय-जय जय सति लावण्यश्रीजी, तेरी महिमा गाएं
इतनी क्या जल्दी जाने की, हमको भी बतलाएं।।

संयम की उजली चादर का, तुमने मान बढ़ाया।
ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया, जीवन को चमकाया।
तिरपन साल संयम-पर्याय के, किए हैं काम सवाए।।

सोहनकुमारी जी सतिवर से, पाए थे तुमने संस्कार।
तन की छाया बनकर रहती, किया था जीवन का श्रृंगार।
लज्जावती सतिवर सहयोगी! क्या-क्या बात बताएं?

हुबली मर्यादा-महोत्सव पर, किए साथ में गुरुदर्शन।
सहज-सरलता लखकर तेरी, हर्षित-पुलकित है कण-कण।
मीरा रोड का मिलन हमारा, स्मृतियों में वो आए।।

दो हजार बीस का पावस, बंगलोर में साथ हुआ।
यशवन्तपुर में हुआ आपका, गांधीनगर में मेरा हुआ।
छः बार हम मिले आपसे, अपना भाग्य सराएं।

सिद्धान्तश्रीजी, दर्शितप्रभाजी को तुमने तैयार किया।
खूब समाधि दी दोनों ने, कहता मेरा आज हिया।
हिम्मत रखना छोटी सतियों, अणिमा भाव सुनाएं।।

दिव्य लोक से गण की सेवा, करते रहना तुम सतिवर।
गण का कर्ज चुकाना अब तुम, गण ही है यह श्रेयस्कर।
महाश्रमण गुरुवर चरणों में, सविनय शीश झुकाएं।।

लय - जनम-जनम का साथ

संयम की बगिया महकाई

● मुनि हिमांशु कुमार ●

हम गुण गाते हैं सब मिलकर,
साध्वी लावण्य नाम सुखकर।
हम गुण...

KGF में जन्म लिया, संचेती कुल को धन्य किया।
लावण्य सदा रहता मुख पर।।
हम गुण...

गुरु तुलसी की करुणा पाई, संयम की बगिया महकाई।
जीवन चमकाया ज्यों दिनकर (शशधर)।।
हम गुण...

साध्वी सोहनां का मिला संग, जीवन में इन्द्रधनुषी रंग।
लंबी लंबी यात्रा थी प्रखर।।
हम गुण...

कनार्टका तेरी जन्म धरा, संयम भी तुमने यही धरा।
सिंधनूर प्रस्थान अमर।
हम गुण...

सहज, सरलता, निश्चलता, आकर्षित करती निर्मलता।
शीघ्रातिशीघ्र मुक्ति को वर।।
हम गुण...

चैन्नई पिछला चौमास किया, न्यातिलों ने भी लाभ लिया।
दर्शित, सिद्धान्त प्रभा मनहर।।
हम गुण...

लय: जय बोलो संघ

संयम सौरभ महकाई

● साध्वी पावन प्रभा ●

संयम सौरभ महकाई।

साध्वी लावण्यश्रीजी जीवन बगियां सरसाई।।
सौम्य सहजता और मधुरता याद तुम्हारी आती,
कोपल में सहवास मिला, भक्ति नहीं भूली जाती,
मीठी-मीठी बोली सतीवर सबके है मन भाई।।

विनय समर्पण कार्यकुशलता तेरी अद्भुत न्यारी,
वत्सलता से हर मानव को लगती थी तुम प्यारी,
सात दशक तक करी साधना गण की आब बढ़ाई।।

तुलसी युग में संयम श्री की अतुल सम्पदा पाई,
समय-समय पर महाप्रज्ञ गुरुवर की कृपा सवाई,
महाश्रमण के स्वर्णिम युग में नैय्या पार लगाई।।

निज्जरट्टिये आगम की वाणी को सफल बनाया,
सिद्धान्त श्री दर्शित प्रभा का योग मिला मनचाया,
आध्यात्मिक सम्बल सेवा से, कर ली खूब कमाई,
तन से मन से सेवा कर, चित्त समाधि पहुँचाई।।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है।
माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है,
वहां आत्मशुद्ध है, विश्वास भी है।

- आचार्य श्री महाश्रमण

आत्मारधना के पर्व पर्युषण महापर्व पर विशेष

आत्म परिमार्जन का संदेशवाहक पर्युषण महापर्व

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

भगवान महावीर ने साधक जीवन के लिए कुछ करणीय एवं चिन्तनीय बिन्दु प्रस्तुत किए। मैंने क्या किया? मेरे लिए क्या करणीय शेष है? और क्या मैं कर सकता हूँ पर प्रमादवश नहीं कर पा रहा हूँ? ये चिन्तनीय प्रश्न भौतिक दृष्टि से नहीं अपितु आत्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से है। भौतिक जगत में शरीर और परिवार के लिए तो चिन्तन चलता ही रहता है किन्तु आत्मिक व आध्यात्मिक दृष्टि से चिन्तन-मनन करने वाले विरले ही होते हैं। भौतिक जगत तो केवल इस शरीर तक सीमित है, क्योंकि शरीर छूटने के साथ ही परिवार और पदार्थ यहाँ छूट जाते हैं, साथ में जाते हैं व्यक्ति के शुभ-अशुभ कर्म यानि पुण्य और पाप। जीवन में प्रवृत्ति के अनुसार कर्म का बंधन होता रहता है। प्रवृत्ति मात्र बंधन का कारण है चाहे शुभ हो अथवा अशुभ। जब तक व्यक्ति सिद्धत्व, बुद्धत्व, मुक्तत्व को प्राप्त नहीं कर लेता, कर्म बंधन का यह क्रम निरन्तर चलता रहता है।

यद्यपि एक श्रावक गृहस्थ जीवन में रहता हुआ पूर्ण रूप से सावद्य प्रवृत्ति से मुक्त नहीं रह सकता किन्तु लक्ष्यपूर्वक ध्यान दे तो अनेक प्रकार से सावद्य प्रवृत्ति से मुक्त रह सकता है, जिससे पाप कर्म का बन्धन न हो। यदि व्यक्ति ध्यान दे और कार्य अनासक्त भावों से करे तो भी निकाचित कर्म से मुक्त रह सकता है।

छह खंड के साम्राज्य के स्वामी भरत चक्रवर्ती ने राज्य संचालन करते हुए केवलज्ञान का वरण कर लिया क्योंकि उनके मन में, चिन्तन में कोई आसक्ति का भाव नहीं था।

जैन परम्परा में चातुर्मासकाल में आने वाला पर्युषण महापर्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय माना गया है। इस अवसर पर प्रत्येक जैन धर्मावलम्बी को विशेष रूप से अनासक्त चेतना के जागरण का प्रयास करना चाहिए। अनासक्त चेतना के जागरण होने पर ही व्यक्ति के दृष्टिकोण में बदलाव होने लगता है और व्यक्ति संयम साधना व धर्मारधना की ओर प्रवृत्त हो जाता है। पर्युषणकाल में यदि व्यक्ति अशुभ प्रवृत्ति से निवृत्त होने का लक्ष्य रखता

है तो उसके लिए भी यह अति उत्तम बात है। जैन परम्परा में प्राचीनकाल से ही आध्यात्मिक अनुभूति कराने वाला यह महत्वपूर्ण पर्व है। मर्यादित, संस्कारित और जीवन पद्धति को सुव्यवस्थित कराने वाला यह पर्व है। दिव्यता और भव्यता का सृजन और आत्मा का परिमार्जन कराने वाला पर्व है। सहिष्णुता, कोमलता, सरलता, स्नेहभाव और पारस्परिक सौहार्द को संचार कराने वाला यह पर्व महापर्व कहलाता है। यह जाने-अनजाने में हुई भूलों के परिष्कार का पर्व है। सकारात्मक सोच के साथ आत्मचिन्तन, आत्ममंथन तथा आत्मावलोकन के साथ मनाने से ही इस पर्व की सार्थकता को सिद्ध किया जा सकता है।

इस अवसर पर प्रत्येक धर्मारधक व्यक्ति को निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देने की महनीय अपेक्षित लगती है- गुरु के प्रति सर्वात्मा समर्पण, सम्यक् दृष्टिकोण, मनोनिग्रहण का भाव, क्रोध पर नियंत्रण, अपनी गलतियों के प्रति अपराध बोध, दूसरों की आलोचना से बचाव, नियमों के पालन में दृढ़ता, परिषदों को पुरस्कार समझने की भावना,

निर्णय शक्ति का विकास - ये कुछ ऐसे बिन्दु हैं जिनके द्वारा बिन्दु से सिन्धु, भक्त से भगवान, आत्मा को परमात्मा बनाने की दिशा में अपनी अहं भूमिका अदा कर सकते हैं। आवश्यकता है पर्व के हार्द को समझें और उसी दिशा में प्रस्थान करने का लक्ष्य बनाएं। तथा स्वाध्याय, ध्यान, तप, जप के साथ आत्मा को निरन्तर भावित करें। इस अवसर पर केवल क्षमायाचना नहीं बल्कि साथ में खमत-खामणा करें अर्थात् क्षमा का आदान-प्रदान करें। क्षमा मांगना आसान है किन्तु क्षमा देना तो बहुत ही कठिन नहीं अपितु महाकठिन है। यह कठिनतम कार्य पर्युषण पर्व की आराधना करने वाले को सिद्ध, बुद्ध मुक्त बनाने में अपनी अहं भूमिका निभा सकता है। इससे परिवार, समाज, राष्ट्र विघटन से बच जाता है।

WW भगवान ऋषभ से भगवान महावीर पर्यन्त सभी तीर्थंकर, आचार्य परम्परा में सभी आचार्य, साधु-साध्वियां, श्रावक-श्राविकाओं ने पर्युषण की आराधना कर मुक्त होने की दिशा में प्रस्थान किया है, करते हैं और करते रहेंगे।

संक्षिप्त खबर

ढाई अक्षर से बनती है रिश्तों की दुनिया खुशहाल

चेन्नई। ढाई अक्षर का शब्द है- प्रेम, प्यार, स्नेह, शक्ति, भक्ति, दुर्गा, लक्ष्मी आदि। ढाई अक्षर का अपना महत्व है। दो अक्षर का लक होता है और ढाई अक्षर का भाग्य। उपरोक्त विचार आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी डॉ गवेषणाश्रीजी ने जैन तेरापंथ नगर, माधावरम् चेन्नई स्थित तीर्थकर समवसरण में 'ढाई अक्षर के शब्द' विषय पर प्रस्तुति देते हुए कहे। साध्वीश्री ने आगे कहा कि पारिवारिक संबंध हो, सामाजिक क्षेत्र हो, व्यापारिक क्षेत्र हो, प्रत्येक संबंधों में ढाई अक्षर की महत्वपूर्ण योग्यता है। धर्म शब्द भी ढाई अक्षर का है। धर्म-व्याख्या नहीं व्याप्ति है, परिभाषा नहीं प्रयोग है, अभिव्यक्ति नहीं अनुभूति है, धर्म नारा नहीं जीवन है। जीवन में यदि ढाई अक्षर को समझ लें तो रिश्तों की दुनिया खुशहाल बन सकती है। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि पत्नी को पति का प्रेम चाहिए, बच्चों को माता-पिता का स्नेह, रोगी को सेवार्थी का प्रेम और साधु-संतों को श्रावकों की भक्ति चाहिए। यह एक चिकित्सा है जो कामधेनु और कल्पवृक्ष के समान है। इस ढाई अक्षर में ऐसा चुंबकीय आकर्षण है जिससे समाज, परिवार, खुशी और प्रेम से रह सकता है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मेरुप्रभाजी ने कुशलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया।

हिट युवा फिट युवा का त्रिदिवसीय आयोजन

धुबड़ी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित हिट युवा फिट युवा कार्यक्रम का त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। प्रथम चरण में वॉकथान तेरापंथ युवक परिषद धुबड़ी के युवा साथी भरत बेंगानी व हितेश चोरडिया ने वॉक करते वक्त ध्यान रखने योग्य बिंदुओं को लोगों के सामने रखा व उसके बाद 30 मिनट के लिए संयुक्त रूप से वॉकिंग की। द्वितीय चरण में नेताई धुबनी घाट के किनारे योगा ट्रेनर मधु बेंगानी द्वारा यौगिक प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में बड़े सुंदर ढंग से उपस्थित लोगों को यौगिक क्रिया की महत्ता के बारे में समझाया गया। फिर उसका प्रयोग भी करवाया गया। तृतीय चरण में जुम्बा वर्कशाप में स्थानीय तेरापंथ भवन में सिलीगुड़ी से पधारे जुम्बा ट्रेनर बेनिता दत्ता व शालिनी मेंडा ने उपस्थित प्रतिभागियों को जुम्बा का प्रयोग करवाया। अंत में कार्यक्रम संयोजक भरत बेंगानी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिट युवा फिट युवा के अंतर्गत योग कार्यशाला

अमराईवाड़ी-ओढव। अभातेयुप द्वारा निर्देशित हिट युवा फिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा योग एवं प्रेक्षाध्यान की कार्यशाला का आयोजन क्रिस्टल इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, वस्त्राल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक प्रार्थना से हुआ। तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा योग करने से हम निरोगी रहेंगे जिससे हम अपना और समाज का कल्याण कर सकेंगे। मंत्री सुनील चिपड़ ने फिट युवा हिट युवा के कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी दी एवं इंटरनेशनल ट्रेनर शीला गांधी का परिचय दिया। शीला गांधी ने बच्चों को प्राणायाम, डीप ब्रीथिंग, सूर्य नमस्कार एवं विभिन्न प्रकार की क्रिया करवाकर उनके बारे में जानकारी दी। क्रिस्टल स्कूल के प्रिंसिपल दीपक कुमार एवं वाइस प्रिंसिपल आकाश कुमार को शीलड देकर सम्मानित किया गया। आभार ज्ञापन कार्यक्रम के संयोजक मयंक गेलडा ने किया। कार्यक्रम में लगभग 250 बच्चों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार मंत्री जयंती लाल गाँधी ने किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ उधना। तेरापंथ युवक परिषद उधना के तत्वावधान में बसंतिलाल अर्पित कुमार नाहर का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारक अर्जुन मेडतवाल, मिश्रीलाल नंगावत, संजय बोथरा, अनिल जैन ने नमस्कार महामंत्र एवं मंगल स्तोत्रों के उच्चारण के साथ गृह प्रवेश कार्यक्रम को संपादित किया।

प्लास्टिक के नुकसान से बचने का करें प्रयास

पाली।

शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य कार्यशाला आयोजित की गई। तेरापंथ सभा भवन में समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत अखिल भारतीय महिला मंडल द्वारा निर्देशित नो यूज प्लास्टिक बैग की कार्यशाला का आयोजन मुनि सुमति कुमार जी ठाणा तीन के सान्निध्य में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ बहनों ने नमस्कार महामंत्र से किया।

तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। मुनिश्री ने कहानी के माध्यम से प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी। मुनि सुमतिकुमार जी ने कहा कि प्लास्टिक उपयोग से सभी वर्ग के जीवों को हानि पहुंचती है। प्लास्टिक से बहुत से जानवरों को मृत्युदंड मिल जाता है। जानवर ना तो बोल सकते हैं, ना ही अपनी तकलीफ किसी को बता सकते हैं, प्लास्टिक के सेवन से उनकी अकाल ही मृत्यु हो जाती है।

वर्तमान में हम देख रहे हैं कि मनुष्य में भी प्लास्टिक का प्रयोग करने पर शरीर पर इस का प्रभाव दिख रहा है जैसे कि कैंसर, अस्थमा, पेट की बीमारियां आदि ये सब सुनने को मिलता है। प्लास्टिक का उपयोग करने पर मनुष्यों और जानवरों दोनों पर प्रभाव पड़ रहा

है। इसलिए इसका उपयोग हमें ज्यादा से ज्यादा कम करना चाहिए। मुनि देवार्थ कुमार जी ने कहा कि हमें प्लास्टिक के उपयोग से बचना चाहिए क्योंकि वह पृथ्वी के लिए हानिकारक है और इससे सभी को ज्यादा नुकसान होता है। तेरापंथ महिला मंडल पाली की अध्यक्ष सुषमा डागा ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित 'रीसाइकल ऑफ प्लास्टिक' के बारे में जानकारी देते हुए सभी के प्रश्नों का समाधान दिया।

बबिता सालेचा ने सबका आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा मरलेचा ने किया।

धार्मिक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन

साउथ हावड़ा।

आचार्य महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा दक्षिण हावड़ा तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में धार्मिक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन प्रेक्षा विहार में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- भारतीय साधना पद्धति में संगीत का विशेष स्थान है। संगीत रस है, वेद है, संगीत में ताकत है। संगीत के माध्यम से अनेक प्रकार की चिकित्सा भी कर सकते हैं। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिससे व्यक्ति रागी से वीतरागी बन जाता है। जिसके पास कंठ होते हैं, गाने की कला होती है तो जनता को बांधे रखता है। साधु-साध्वियां प्रवचन में भी संगीत का उपयोग करते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा- समाज में बहुत प्रतिभाएं हैं। उनको तराशने का मौका मिलता है। प्रतियोगिता प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं ज्ञान वृद्धि को लिए होनी चाहिए। ऐसे कार्यक्रमों से शासन की प्रभावना भी होती है। कनिष्ठ ग्रुप में प्रथम हेदया भट्टेरा, द्वितीय इशिका गधैया, तृतीय

मायरा चिंडालिया व आरव बरमेचा, टीनेजर्स ग्रुप में प्रथम हर्ष संचेती, द्वितीय गरिमा दुगड़, तृतीय हर्षल राखेचा रहे। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के निर्णायक उत्तमचंद बैद, डॉ. अरिहंत सिंघवी, अंशु सेठिया थे। कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ युवक परिषद व किशोर मंडल सदस्यों के संगान से हुआ।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष गगन दीप बैद ने स्वागत भाषण, आभार मंत्री अमित बैगानी व संचालन मोहित नाहटा ने किया।

जैन विद्या परीक्षा के प्रमाणपत्र का वितरण

जलगांव।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी प्रबलशशा जी ठाणा - 3 के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के अंतर्गत जैन विद्या पाठ्यक्रम परीक्षा के प्रमाणपत्र वितरण कार्यक्रम अणुव्रत भवन के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित "जैन विद्या परीक्षा" में

कुल 62 विद्यार्थियों ने भाग लिया था जिनमें से 59 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। साध्वी प्रबलशशाजी ने कहा कि परीक्षा की और अधिक तैयारी करके ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाई-बहन जैन विद्या परीक्षा से जुड़ें। अखिल भारतीय स्तर पर भाग-1 में ललिता सिपानी ने दूसरा स्थान प्राप्त कर जलगांव का गौरव बढ़ाया। समाज के गणमान्य व्यक्तियों एवं संस्थाओं के

पदाधिकारियों द्वारा विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र व सांत्वना पुरस्कार दिए गए। खानदेश की आंचलिक संयोजिका वीणा छाजेड़, केन्द्र व्यवस्थापक भारती श्यामसुखा, सहकेन्द्र व्यवस्थापक राजू सेठिया ने कार्यक्रम का सुचारु रूप से नियोजन किया।

तेरापंथ सभा आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया।



संक्षिप्त खबर

कैंसर जागरूकता अभियान

साउथ दिल्ली। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल साउथ दिल्ली द्वारा कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत मासिक संगोष्ठी का आयोजन अध्यात्म साधना केंद्र महारौली में किया गया। कार्यक्रम का मंगल शुभारंभ एस डी-3 की बहनों के द्वारा प्रेरणा गीत के मंगल संगान के साथ हुआ। मंडल अध्यक्ष शिल्पा बैद ने सभी का स्वागत किया। योग प्रशिक्षक अजय भट्ट ने कैंसर से जागरूक रहने की प्रेरणा दी ताकि समय रहते ही इसका निदान किया जा सके। नेचुरोपैथी डॉक्टर काजल ने कैंसर के कारण, प्रकार, लक्षण आदि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने खान-पान की शुद्धि, डायट चार्ट की भी जानकारी दी। संगीता दुगड़, सपना दुगड़, संगीता पुगलिया, मधु सेठिया, नेहा सेठिया ने कैंसर के बारे में एक सुंदर प्रेजेंटेशन दिया। योग प्रशिक्षक अभिलाषा डागा ने बताया कि कैंसर से अधिक कैंसर का डर लोगों के मस्तिष्क में है। तनाव भी कैंसर का एक मुख्य कारण है। तनाव को दूर करने के लिए श्वास प्रेक्षा, महाप्राण ध्वनि, अनुलोम विलोम, कायोत्सर्ग आदि के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का कुशल संचालन एसडी-3 की संयोजिका सपना दुगड़ ने किया।

आगम मंथन प्रतियोगिता के प्रमाण पत्र वितरित

नोखा। समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित आगम मंथन प्रतियोगिता के प्रमाण पत्र का वितरण नोखा में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री ने कहा भगवान की वाणी आगमों में है इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है। प्रतियोगिता में समय निकालकर सम्मिलित होना ज्ञानवर्धक है। प्रभारी इंद्रचंद्र बैद कवि ने बताया 30 प्रतियोगिता धारकों को तेरापंथ समाज द्वारा सम्मानित किया गया। प्रायोजक घेवरचंद्र भंवरलाल बैद रहे।

चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन

मोमासर। साध्वी संघप्रभा जी ठाणा 3 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन मोमासर में 'कैसे हो सुखमय बुढ़ापा' विषय पर चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण चंपालाल बैंगानी ने सुमधुर गीत से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि बुढ़ापा उम्र की डाली का वह पका हुआ फल है जिसके अनुभवों की मिठास और सम्यक चिंतन की सुवास न केवल स्वयं का अपितु पूरे परिपार्श्व को आनंदित कर देती है बशर्ते कि हर इंसान आसन, प्राणायाम, ध्यान व योगमय जीवन शैली द्वारा आग्रह संयम, आहार संयम, इंद्रिय संयम, तनाव मुक्ति तथा निषेधक विचार संयम करना सीखे। साध्वी विधिप्रभा जी ने बुढ़ापे को पुनः यौवन के रूप में बिताने के लिए अनेक प्रयोग एवं टिप्स बताकर संस्मरण प्रस्तुत किए। तेरापंथ महिला मंडल ने सुन्दर गीतिका का संगान किया। अशोक पटावरी, सुरेंद्र संचेती, गुमानमल सेठिया, पुष्पा देवी पटावरी आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभाजी ने किया।

ज्ञानशाला मिनी कैंप का आयोजन

कांटाबांजी। महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षांति प्रज्ञा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का मिनी कैंप (10 से 14 वर्ष के बच्चे) का स्थानीय तेरापंथ भवन कांटाबांजी में आयोजन हुआ। कैंप का शुभारंभ समणी जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। पहले सत्र में समणी जिनप्रज्ञा जी ने बच्चों को फिजिकल ऐक्टिविटी करवाई। द्वितीय सत्र में समणी क्षांतिप्रज्ञा जी ने पच्चीस बोल, तत्व ज्ञान की बातें बताईं। तीसरे सत्र में ग्रुप डिस्कशन के साथ जैन इतिहास का क्रिएटिव प्रेजेंटेशन करवाया गया। कैंप में लगभग 80 बच्चों ने भाग लिया।

नवगठित कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह

मण्डिया।

तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया की नवगठित कार्यकारिणी का शपथग्रहण समारोह साध्वी संयमलता जी ठाणा 4 के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के उपाध्यक्ष पवन मांडोट की गरिमाय उपस्थिति के साथ संस्कारक व मण्डिया परिषद् के प्रभारी विकास बांठिया, गौतम खंब्या ने कार्यक्रम को सम्पादित करवाया। तेरापंथ युवक परिषद् के निर्वतमान अध्यक्ष प्रवीणकुमार दक ने नव नियुक्त अध्यक्ष कमलेश गोखरू को

शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने वर्ष 2024-25 हेतु अपने प्रबंध मंडल, कार्यकारिणी एवं परामर्शक टीम को पद व संविधान की शपथ दिलाई।

निर्वतमान अध्यक्ष प्रवीण दक ने नवमनोनीत अध्यक्ष कमलेश गोखरू को दायित्व हस्तांतरण करते हुए सम्पूर्ण टीम को आगामी कार्यकाल के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् उपाध्यक्ष पवन मांडोट ने शुभकामनाएं देते हुए सेवा, संस्कार, संगठन के तहत कार्य करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर साध्वी संयमलता जी ने कहा कि जहां संगठन होता है

वहां संविधान होता है। संविधान की प्रक्रिया में संगठन में नए-नए व्यक्ति आगे आते हैं। उन्होंने विकास के गुर देते हुए गुरु दृष्टि की आराधना करने के लिए प्रेरित किया।

साध्वी मार्दवश्री जी ने नवगठित कार्यकारिणी को शुभकामनाएं देते हुए सफल कार्यकाल की मंगलकामना की।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के सदस्य मण्डिया सभा अध्यक्ष सुरेश भंसाली, महिला मंडल मंत्री टीना दक, युवक परिषद् सदस्यों व श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

अंत में आभार ज्ञापन मंत्री प्रदीप भंसाली ने किया।

शरीर से पहले मन की स्वच्छता बनी रहे

आर आर नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल आर. आर. नगर द्वारा चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सिद्धप्रभा जी के द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई।

मंडल की बहनों के द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष सुमन पटावरी ने पधारी हुई बहनों का स्वागत किया। कार्यक्रम दो चरणों में संपादित किया गया। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा हमारा

चित्त समाधि में रहे, स्वावलंबी बने, सहिष्णुता का अभ्यास करते रहे। शारीरिक स्वच्छता से पहले मन की स्वच्छता बनी रहे।

दीर्घ स्वास का अभ्यास करें, संयम को जीवन में अपनाएं, आवश्यकता से अधिक न बोलें, सोचें और फिर बोलें। प्रथम चरण में साध्वी आस्थाप्रभाजी ने चित्त समाधि का अर्थ बताते हुए कहा- चित्त का अर्थ है चेतना और समाधि का अर्थ है मन, वचन और काया में समता।

साध्वीश्री ने शरीर और मन की क्षमता को समझने और उनको स्वस्थ रखने के लिए प्राणायाम एवं योग के प्रयोग कराए। द्वितीय चरण

में साध्वी मलययशा जी ने कहा कि सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए चित्त समाधि में रहें। जो व्यक्ति मन को जीत लेता है, वह सब को जीत लेता है। हमारा जीवन शुभ भावों में रहे, हम सबसे मैत्री भाव रखें।

साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने मंगल भावना के प्रयोग कराते हुए बताया कि बाहरी आनंद खोजने के बजाय आंतरिक शक्तियों को जगाने का प्रयास करें। शिविर में लगभग 50 बहनों की उपस्थित रही। चित्त समाधि योग शिविर का संचालन ममता जैन एवं आभार ज्ञापन पदमा मेहेर ने किया।

'कैसे बने परिवार का भविष्य' संगोष्ठी का आयोजन

डोंबिवली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में 'कैसे बने परिवार का भविष्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन डोंबिवली सभा भवन में किया गया। इस विषय पर आईआरएस सारिका जैन (ज्वाइंट कमिश्नर इनकम टैक्स) मुंबई ने उदाहरणों के साथ अपने विचार व्यक्त किए।

उन्होंने अपना परिचय देते हुए बताया कि मैं जैन हूँ, तेरापंथी हूँ, मैं आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञाजी, आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन कर चुकी हूँ और अपना तीर्थ

भी गुरु दर्शन को मानती हूँ। आप लोग भी अपने बच्चों को जैनत्व के संस्कार दें, उनको साधु-साध्वियों के प्रवचन सुनाएं, स्वयं सामायिक करें व बच्चों को भी सामायिक के संस्कार दें। जिससे आत्म कल्याण के साथ धर्म संघ की प्रभावना हो सके। उन्होंने उपस्थिति और अनुशासन देखकर प्रसन्नता की अनुभूति की। मुनि कमलकुमार जी स्वामी ने अपने वक्तव्य के द्वारा बताया कि आप सोचते हैं कि हमारे बच्चे धनवान हों, विद्वान हों, बलवान हों परंतु थोड़ा यह भी चिंतन करें कि हमारे बच्चे चरित्रवान हों। अगर चरित्र की सुरक्षा होगी तो उनकी शोभा ही नहीं

बढ़ेगी वह एक दिन इंसान से भगवान भी बन सकते हैं। जीवन का लक्ष्य केवल डिग्री पाना और पैसा कमाना ही नहीं है, थोड़ा इस पर भी गहराई से चिंतन करें। बच्चों में विनम्रता, सहिष्णुता, सेवा-भावना, कर्तव्य परायणता के संस्कार हों, जिससे परिवार में शांति और सौहार्द का वातावरण बना रहे।

इस अवसर पर रेखा खांटेड ने 24, चंदनमल धींग ने 16, सरोज बैद ने 12, दर्शन मेहता ने 23, हेमलता मुणोत ने 23, नानालाल धोका ने 8 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ सभा मुंबई के अध्यक्ष माणक धींग ने भी अपने विचार व्यक्त किए।



संक्षिप्त खबर

तप अभिनन्दन कार्यक्रम

फलसूंड। तेरापंथ सभा भवन फलसूंड में विराजित युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिक्षा 'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में तप अभिनन्दन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि तप एक माध्यम है जिससे व्यक्ति अपने आंतरिक व बाह्य व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा तपस्या कषायों को अल्पतम करने व निर्जरा का महान साधन है। साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने गीतिका के माध्यम से तपस्वियों की अनुमोदना की। तपस्या में अपनी सहभागिता निभाने हेतु अमृतलाल तातेड़ व ज्योति तातेड़ ने पखवाड़े तप से अपने आप को भावित किया है। भाई-बहन तपस्या के द्वारा अपने आप को अभिस्नात् करने के लिए संलग्न हैं। सभा अध्यक्ष अशोक तातेड़, कमलेश कोचर, फलसूंड ज्ञानशाला व कन्यामण्डल ने पृथक-पृथक गीतिका से भावों को व्यक्त कर तपस्वियों का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का संचालन सुमेर कोचर ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत। तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा रक्तदान कैम्प, संयम विहार, चातुर्मास प्रवास स्थल, वेसु-सूरत में आयोजित किया गया। इस रक्तदान शिविर में अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया, प्रकाश छाजेड की विशेष उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनन्दन गादिया, मंत्री सौरभ पटावरी और पदाधिकारी गण उपस्थित रहे। शिविर में सरदार वल्लभभाई पटेल ब्लड बैंक की सहभागिता से तृतीय रक्तदान शिविर में कुल 55 रक्त यूनिट एकत्रित हुए। किरण हॉस्पिटल ब्लड बैंक के सहयोग से चतुर्थ रक्तदान शिविर में कुल 72 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ।

टीटीएफ कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के आयाम तेरापंथ टास्क फोर्स (टीटीएफ) के अंतर्गत देशभर के युवाओं व आमजन को प्रशिक्षित ट्रेनर्स द्वारा आपातकालीन स्थिति में आयी किसी भी आपदा में स्वयं की व आस-पास के लोगों के जीवन रक्षा हेतु ऑफलाइन व ऑनलाइन ट्रेनिंग दी जाती है। अभातेयुप के इस आयाम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद लिलुआ द्वारा ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेरापंथ टास्क फोर्स के एक वीडियो के माध्यम से तेरापंथ टास्क फोर्स की वर्तमान समय में उपयोगिता और विभिन्न आपदा-विपदा की परिस्थिति में की गई सेवाओं के बारे में विवरण दिया गया। तेरापंथ युवक परिषद लिलुआ के मंत्री जयंत घोड़ावत ने सभी का स्वागत किया। जय चोड़रिया और प्रतीक जैन ने सरल तरीके से आपदा प्रबंधित के गुरु सिखाए।

रक्षिता रोहिणी बनने की पायी प्रेरणा

कांटाबांजी। तेरापंथ भवन कांटाबांजी में बने रक्षिता रोहिणी कार्यक्रम का आयोजन समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षांतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में हुआ। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से अनेक बहनें उपस्थित थीं। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। तत्पश्चात् तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा स्वागत एवं मंगलाचरण के रूप में गीतिका की प्रस्तुति दी गई। समणीजी कहा कि महिला को घर परिवार तक सीमित नहीं रहना है। उसे बाहर निकल कर समाज और राष्ट्र को भी प्रकाशित करना है। महिला को अपने महिला होने पर गर्व महसूस करना चाहिए। बहनें जो आज तक कभी माइक के सामने नहीं आई थी वे आगे आकर बड़े ही कॉन्फिडेंस के साथ अपने अनुभव बता रही थीं। नवयुवतियों में जैन संस्कारों को संपोषित करने हेतु समणी जी ने उन्हें नमस्कार महामंत्र एवं प्रतिदिन एक सामायिक अवश्य करने की प्रेरणा दी। आभार ज्ञापन सपना जैन ने किया।

मानसिक स्वास्थ्य व वुमेन्स स्पेशल रक्तदान शिविर का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेमंम के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद द्वारा आयोजित कैसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत मानसिक स्वास्थ्य एवं वूमैन्स स्पेशल रक्तदान शिविर शासनश्री साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा- 4 के सानिध्य में तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी, सिकंदराबाद में आयोजित हुआ।

नमस्कार महामंत्र व महाप्राण ध्वनि के साथ प्रेक्षा ध्यान के एक छोटे से

प्रयोग के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अध्यक्ष कविता आच्छा द्वारा स्वागत वक्तव्य एवं शुभकामनाएं प्रेषित की गईं। मुख्य वक्ता सॉफ्ट स्किल्स एंड हैप्पीनेस कोच सुवर्णा शर्मा अपने सत्र में बताया कि हम शारीरिक रूप से कितने भी स्वस्थ हों पर यदि हमारा दिमाग और मन विचलित है तो हम किसी भी परिस्थिति का आनंद नहीं ले पाते हैं इसलिए मानसिक स्वास्थ्य का स्वस्थ होना सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। सत्र के पश्चात् जिज्ञासा समाधान का सत्र रखा गया। चंदन कोठारी ने आभार

ज्ञापन किया। साध्वी अमितरेखाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी द्वारा मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सरला भूतोड़िया ने किया।

संयोजिका सलोनी लुनावत व मनीषा सिंघी का विशेष श्रम नियोजित दूसरे सत्र में वूमैन्स स्पेशल रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद के साथ सहयोगी संस्था के रूप में तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद ने किया।

ज्ञान, संपदा और शक्ति है अमूल्य निधि

सिरियारी।

भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में श्री राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सांडिया से समागत लगभग 150 बालिकाओं एवं अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए मुनि मणिलालजी के मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा- शिक्षा और संस्कारों के योग से जीवन का निर्माण होता है।

आज के युग में शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ा है किन्तु संस्कार घट रहे हैं, जो

चिन्तनीय प्रश्न है। जब तक जीवन में अच्छे संस्कार नहीं होंगे तो वह शिक्षा भार बन जाएगी।

मुनिश्री ने कहा- एक कन्या में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा तीनों का वास है। लक्ष्मी-सम्पदा, सरस्वती श्रुत-ज्ञान और दुर्गा-शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। अतः प्रत्येक कन्या को चाहिए कि वह कभी भी अपने आप में हीनता महसूस नहीं करे बल्कि अपने भीतर की शक्ति को जगाकर ज्ञान और सम्पदा की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

ज्ञान, सम्पदा और शक्ति वह अमूल्य निधि है जिसमें व्यक्ति सदैव विकास की ओर अग्रसर हो सकता है।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य मोहनलाल चौधरी एवं प्राध्यापक लक्ष्मीनारायण सिलोड़ा उपस्थित थे।

मीडिया प्रभारी लूणकरण बैद ने आचार्य भिक्षु एवं समाधि स्थल के बारे में अवगत कराया। आचार्य भिक्षु समाधि पर सभी ने अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

फिट युवा हिट युवा आयाम का आयोजन

दिल्ली। तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित फिट युवा हिट युवा आयाम का आयोजन तेरापंथ भवन, शास्त्री नगर में किया गया। आयोजन का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। योग प्रशिक्षक कमल सिंह द्वारा साथियों को व्यायाम और योगाभ्यास करवाया गया। इस उपक्रम के दौरान लगभग 35 युवा साथियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में ते.यु.प पदाधिकारी क्षेत्रीय संयोजक जितेंद्र दुगड़, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा शास्त्री नगर के अध्यक्ष राजा कोठारी व मंत्री प्रवीन गोलछा के साथ युवा साथियों की अच्छी उपस्थित कार्यक्रम में रही। कार्यक्रम में तेरापंथ किशोर मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल के सदस्यों की भी सहभागिता रही।

क्रोधी नहीं सहनशील बनें, आलसी नहीं समय का सदुपयोग करें

नवरंगपुर।

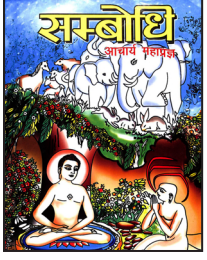
अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नवरंगपुर द्वारा करणीय कार्यशाला सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय (जावा गुड़ा) में कार्यक्रम का प्रथम चरण आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बिंदिया जैन ने महाप्राण ध्वनि से करवाया। अध्यक्ष बॉबी जैन ने कहा- इंसान की जिंदगी में सबसे बड़ी महत्वपूर्ण चीज है वह है समय। अगर हम समय को व्यर्थ नहीं करके उसका सदुपयोग करें तो हर कोई अपनी मंजिल में सफलता हासिल कर

सकता है। मंत्री रीना जैन ने 'क्रोधी नहीं सहनशील बनने' के विषय में बताते हुए कहा- हमें प्रतिदिन यह भावना भानी चाहिए कि मैं एक शांत आत्मा हूँ, मेरा जन्म दुनिया में शांति फैलाने के लिए हुआ है। सहनशीलता विकसित करने के लिए दूसरे से अपेक्षा नहीं रखें। गरिमा जैन, पूजा जैन और स्नेह

जैन ने एक बहुत ही सुंदर स्क्रिप्ट के माध्यम से बताया कि क्रोध कितना भी कर ले पर जीत तो सहनशील व्यक्ति की ही होती है। स्कूल के बच्चों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। बिंदिया जैन ने कार्यक्रम का संचालन एवं पूजा जैन ने आभार व्यक्त किया।



संबोधि



गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

प्रश्न यह होता है कि इस प्रकार की साधना में प्रवृत्त व्यक्ति के मन में क्या दुष्प्रवृत्ति कभी नहीं आती? यदि आती है तो फिर वह अहिंसक कैसे हो सकता है?

अहिंसक का साध्य विशुद्ध आत्मा है। वह लक्ष्य से जब भटक जाता है, तब दुष्प्रवृत्ति का शिकार हो जाता है। लेकिन वह उसका साध्य नहीं है। अतः वह पुनः अपने मार्ग में लौट आता है। उस प्रवृत्ति के प्रति उसका मन ग्लानि से भर जाता है, वह शुद्ध हो जाता है। इससे उसके साध्य में कोई अंतर नहीं आता। किन्तु जो अविरत है वह कभी मुनि नहीं बन सकता। अविरत की सत् प्रवृत्ति अच्छी है, आत्मोन्मुखी है। लेकिन वह सर्वथा विरत नहीं है। अतः सत् प्रवृत्ति वाला होते हुए भी मुनि नहीं कहला सकता। साधुत्व के लिए एक ही मार्ग गृहस्थ के लिए यह अपेक्षित है कि वह मन, वाणी और शरीर को सत् की ओर लगाये। योगों की सरलता, समता और शालीनता धार्मिक साधना की कसौटी है। वह अनर्थ हिंसा, झूठ, चोरी आदि से बचे और आवश्यक हिंसा आदि में भी मन को अनासक्त रखे, जिससे सहज में ही कर्म-बंधनों के प्रगाढ़ लेप से बच सके।

३१. इतस्ततः प्रसर्पन्ति, जना लोभाविलाशयाः।
तेन दिग्विरतिः कार्या, गृहिणा धर्मचारिणा ॥

लोभी मनुष्य अर्थार्जन के लिए इधर-उधर सुदूर प्रदेश तक जाते हैं इसलिए धार्मिक गृहस्थ को दिग्विरति-दिशाओं में गमनागमन का परिमाण करना चाहिए।

पांच अणुव्रतों में स्थूल रूप से मर्यादा की जाती है। विश्व विशाल है। मन की आकांक्षाएं भी विशाल हैं। आकांक्षा का संवरण करने के लिए व्यक्ति क्षेत्र (स्थान) का भी संवरण करे। मर्यादावान् व्यक्ति अपने सीमित क्षेत्र से बाहर व्यापार आदि नहीं करता। यह मन पर एक बहुत बड़ा नियंत्रण है। अपनी त्याग वृत्ति के अनुसार पूर्व, पश्चिम आदि सभी दिशाओं का परिमाण निश्चित करके उसके बाहर हर तरह के सावद्य कार्यों से निवृत्ति करना दिग्विरति व्रत है।

३२. उपभोगः पदार्थानां, मोहं नयति देहिनः।
भोगस्य विरतिः कार्या, तेन धर्मस्पृशा विशा ॥

पदार्थों का भोग मनुष्य को मोह में डालता है इसलिए धार्मिक पुरुष को भोग की विरति करनी चाहिए, उसका परिमाण करना चाहिए।

मनुष्य का जीवन सीमित है, लेकिन भोग्य पदार्थ सीमित नहीं हैं। वह स्वल्प जीवन में असीमित पदार्थों का भोग नहीं कर सकता।

अतृप्ति उसे सदा सताती रहती है। भर्तृहरि ने कहा है- 'भोगों को हमने नहीं भोगा किन्तु भोगों ने हमें भोग लिया है। हमने तप नहीं किया किन्तु बिना तप किए हम तप्त हो गए। काल नहीं आया, हम काल के निकट पहुंच गए हैं और तृष्णा जीर्ण नहीं हुई, हम जीर्ण हो गए।' अतृप्ति दुःख है और संतोष सुख।

जैन दर्शन में पन्द्रह प्रकार के कर्मादान और छब्बीस प्रकार के भोगोपभोग का वर्जन है। इनकी प्रवृत्ति में मर्यादा करना-परिमाण करना भोगोपभोग परिमाण व्रत है।

३३. कल्पनाभिः प्रमादेन, दण्डः प्रयुज्यते जनैः।
अनर्थदण्डविरतिः, कार्या धर्मस्पृशा विशा ॥

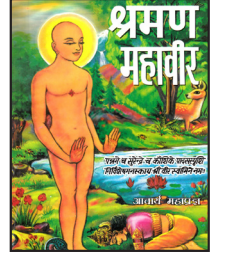
मनुष्य अनेक प्रकार की कल्पनाओं और प्रमाद के वशीभूत होकर दंड-हिंसा का प्रयोग करता है। धार्मिक पुरुष को अनर्थदंड-अनावश्यक हिंसा से निवृत्त होना चाहिए।

धार्मिक व्यक्ति अनावश्यक हिंसा से बचता है। अनावश्यक हिंसा के कारण हैं-मिथ्या कल्पना, प्रमाद और अविश्वास। शीत युद्ध स्पष्टता में नहीं होता। यह अस्पष्ट हृदय की देन है। कल्पनाओं के आधार पर किया गया निर्णय नब्बे प्रतिशत मिथ्या होता है। एक-दूसरे के प्रति व्यक्ति संदिग्ध हो जाता है। संदेह भय को जन्म देता है और प्रतिकार के प्रति सचेष्ट करता है।



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रमण महावीर



ध्यान, आसन और मौन

भगवान् ने कुल मिलाकर सोलह दिन-रात निरन्तर ध्यान-प्रतिमा की साधना की।

भगवान् ध्यान के समय ऊर्ध्व, अधः और तिर्यक्-तीनों को ध्येय बनाते थे। ऊर्ध्व लोक के द्रव्यों का साक्षात् करने के लिए वे ऊर्ध्व-दिशापाती ध्यान करते थे। अधो लोक के द्रव्यों का साक्षात् करने के लिए वे अधोदिशापाती ध्यान करते थे। तिर्यक् लोक के द्रव्यों का साक्षात् करने के लिए तिर्यक्-दिशापाती ध्यान करते थे।

ध्येय का परिवर्तन भी करते रहते थे। उनके मुख्य ध्येय ये थे-

१. ऊर्ध्वगामी, अधोगामी और तिर्यगामी कर्म।
२. बंधन, बंधन-हेतु और बंधन-परिणाम।
३. मोक्ष, मोक्ष-हेतु और मोक्ष-सुख।
४. सिर, नाभि और पादांगुष्ठ।
५. द्रव्य, गुण और पर्याय।
६. नित्य और अनित्य।
७. स्थूल-संपूर्ण जगत्।
८. सूक्ष्म-परमाणु।
६. प्रज्ञा के द्वारा आत्मा का निरीक्षण।

भगवान् ध्यान की मध्यावधि में भावना का अभ्यास करते थे। उनके भाव्य-विषय ये थे-

१. एकत्व-जितने संपर्क हैं, वे सब सांयोगिक हैं। अंतिम सत्य यह है कि आत्मा अकेला है।
२. अनित्य-संयोग का अन्त वियोग में होता है अतः सब संयोग अनित्य हैं।
३. अशरण-अंतिम सचाई यह है कि व्यक्ति के अपने संस्कार ही उसे सुखी और दुःखी बनाते हैं। बुरे संस्कारों के प्रकट होने पर कोई भी उसे दुःखानुभूति से बचा नहीं सकता।

भगवान् ध्यान के लिए प्रायः एकान्त स्थान का चुनाव करते थे। वे ध्यान खड़े और बैठे-दोनों अवस्थाओं में करते थे। उनके ध्यानकाल में बैठने के मुख्य आसन थे-पचासन, पर्यकासन, वीरासन, गोदोहिका और उत्कटिका।

भगवान् ध्यान की श्रेणी का आरोहण करते-करते उसकी उच्चतम कक्षाओं में पहुंच गए। वे लम्बे समय तक कायिक-ध्यान करते। उससे श्रान्त होने पर वाचिक और मानसिक। कभी द्रव्य का ध्यान करते, फिर उसे छोड़ पर्याय के ध्यान में लग जाते। कभी एक शब्द का ध्यान करते, फिर उसे छोड़ दूसरे शब्द के ध्यान में प्रवृत्त हो जाते।

भगवान् परिवर्तनयुक्त ध्येय वाले ध्यान का अभ्यास कर अपरिवर्तित ध्येय वाले ध्यान की कक्षा में आरूढ़ हो गए। उस कक्षा में वे कायिक, वाचिक या मानसिक-जिस ध्यान में लीन हो जाते, उसी में लीन रहते। द्रव्य या पर्याय में से किसी एक पर स्थित हो जाते। शब्द का परिवर्तन भी नहीं करते। वे इस कक्षा का आरोहण कर श्रान्ति की अवस्था पार कर गए।

भगवान् की ध्यानमुद्रा अनेक ध्यानाभ्यासी व्यक्तियों को आकृष्ट करती रही है। उनमें एक आचार्य हेमचन्द्र भी हैं। उन्होंने लिखा है-

'भगवान् ! तुम्हारी ध्यानमुद्रा-पर्यकशायी और शिथिलीकृत शरीर तथा नासाग्र पर टिकी हुई स्थिर आंखों में साधना का जो रहस्य है, उसकी प्रतिलिपि सबके लिए करणीय है।'



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

(पिछला शेष)

जो खान-पान आदि का आकर्षण छोड़ देता है, अध्ययन के लिए अपने आपको समर्पित कर देता है और घो. घोकना (रटना), चि. चितारना (पुनरावर्तन करना दोहराना), पू.- पूछना (प्रश्न करना), लि. लिखना (नोट कर लेना) करता रहता है। तब व्याकरण (ग्रामर) पर अधिकार प्राप्त हो सकता है। व्याकरण की तरह अन्य विषयों पर भी यह बात लागू होती है।

स्वाध्याय के पांच प्रकार प्रत्येक प्रशिक्षु व प्रशिक्षक के लिए मननीय हैं। उनके प्रयोगों से ज्ञान का विकास किया जा सकता है। विकास के अभिप्सु व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह अपने जीवन के अमूल्य समय एवं श्रम को स्वाध्याय में व्यतीत करें।

समाधि-वृद्धि का प्रयोग

समाधि को प्राप्ति में तीन बाधाएं हैं- उपाधि, आधि और व्याधि। भावनात्मक अस्वास्थ्य उपाधि, मानसिक अस्वास्थ्य आधि और शारीरिक अस्वास्थ्य व्याधि है। यह लिखना मुझे असंगत नहीं लगता कि बहुत-सी शारीरिक व मानसिक बीमारियों का बीज भावनात्मक असन्तुलन है। इसलिए उपाधि को दुःख का मूल कहा जा सकता है। दुःख-मुक्त होने के लिए उपाधिमुक्त होना आवश्यक प्रतीत होता है। उपाधि-मुक्ति के अनेक प्रयोग हैं। उनमें एक प्रयोग है ध्यान। ज्यों-ज्यों उपाधि परित्यक्त होती है, त्यों-त्यों समाधि प्रवृद्ध होती है। समाधि का तात्पर्य है पूर्ण एकाग्रता और सहज सुख अथवा शान्ति।

निर्जरा के बारह भेदों में ग्यारहवां भेद है ध्यान। वह आत्म साक्षात्कार और कर्म-मल-शुद्धि का बहुत सशक्त साधन बन सकता है। वह आत्म साक्षात्कार अथवा स्वरूप-प्राप्ति का साधन क्यों बनता है? इस प्रश्न पर विचार करने पर अथवा विचारातीत भूमिका के गवाक्ष से देखे जाने पर मुझे एक दार्शनिक पृष्ठभूमि दिखाई देती है- आत्मा चेतन-स्वरूप है। वह पुद्गल अर्थात् स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण के स्वरूप वाली नहीं है। सोचना, बोलना और शारीरिक चेष्टाएं आत्मा को पुद्गल सापेक्ष प्रवृत्तियां हैं। ध्यान का अर्थ है चिन्तन से अचिन्तन, भाषण से अभाषण और क्रिया से अक्रिया की दिशा में गति। ध्यान का अन्तिम साध्य है आत्म-स्वरूप यानी अमन, अवाक् और अक्रिया की स्थिति की प्राप्ति, जहां आत्मा पुद्गलनिरपेक्ष और पूर्णतया स्व-स्थित हो जाती है। उसका साधन बनता है इन्हीं का अभ्यास।

ध्यान में साधक शरीर को स्थिर व शिथिल करता है। इसका अर्थ है कि वह अपने अक्रिय स्वरूप की ओर गति कर रहा है। ध्यान में साधक मौन करता है। इसका तात्पर्य है कि वह अपने 'अवचन' स्वरूप की ओर गति कर रहा है। ध्यान से साधक मन को एकाग्र अथवा विलीन करने का प्रयोग करता है। इसका अर्थ है कि वह अपने 'अमन' स्वरूप की ओर प्रयाण कर रहा है। ऐसा लगता है कि अमन अथवा निर्विचारता की भूमिका में आन्तरिक प्रसन्नता अनुभूत होती है। जैसा कि पातंजल योगदर्शन में कहा गया है-

निर्विचारैशारदेऽध्यात्मप्रसादः।

पूर्वकृत चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि ध्यान के तीन आयाम हैं- कायिक स्थिरता, मौन और मानसिक शुभ एकाग्रता अथवा अमन की स्थिति। ध्यान योग से अयोग, प्रवृत्ति से निवृत्ति और दुरुपयोग से शुद्धोपयोग की स्थिति को प्राप्त करने का मार्ग है। वह आध्यात्मिक जगत् का प्रतिष्ठित शब्द है।

जब तक शरीर है व्यक्ति दिन-रात एक स्थान में बैठकर ध्यान नहीं कर सकता। उसे चलना भी होता है, खाना भी होता है और भी अनेक कार्य करने होते हैं। इस स्थिति में वह निरंतर ध्यान कैसे कर सकता है? सब क्रियाएं करते हुए भी व्यक्ति काफी हद तक ध्यान कर सकता है। साधक चल रहा है। चलना उसके लिए जरूरी है। पर विचारों के प्रवाह में बहना तो जरूरी नहीं है। वह चलते हुए भी मानसिक ध्यान कर सकता है। अपने मन को चलने में एकाग्र कर दे। बोले नहीं यह वाचिक ध्यान हो गया। चलने के सिवाय अनावश्यक इधर-उधर न देखे-यह आंशिक कायिक ध्यान हो गया।

(क्रमशः)



जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री भवानजी 'बड़ा' दीक्षा क्रमांक : 120

मुनिश्री बड़े उद्यमी, हाथ के चतुर, लेखन तथा चित्रकला में निपुण थे। उपवास से लेकर दस तक की तपस्या चौविहार की तथा ओर भी बहुत तप किया।

- साभार: शासन समुद्र -

अगस्त 2024	2 सितम्बर
सप्ताह के विशेष दिन	पर्युषण पक्खी
5 सितम्बर	8 सितम्बर
आचार्यश्री मधराज जी पट्टोत्सव	भगवती संवत्सरी महापर्व

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

समाचार केवल वर्ड या पीडीएफ फॉर्मेट में abtypitt@gmail.com ईमेल पर ही भिजवाएं।

एक से अधिक दिनों के कार्यक्रम जैसे शिविर, पर्युषण आदि के समाचार एक साथ भिजवाएं।

निवेदक : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
- आचार्य श्री महाश्रमण



ऑनलाइन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

फिट युवा, हिट युवा के अंतर्गत वाँकथॉन कार्यक्रम का आयोजन

कटक।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, कटक द्वारा वाँकथॉन का आयोजन इंडोर स्टेडियम, कटक में हुआ। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी से तेरापंथ भवन में मंगलपाठ श्रवण कर परिषद् व किशोर मंडल के साथी आयोजन स्थल पहुंचे।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कटक शहर के मेयर सुभाष सिंह थे। परिषद के अध्यक्ष विकास जी नौलखा ने स्वागत और सम्मान किया। कटक मेयर सुभाष सिंह ने सभी युवा साथियों को फिट रहने की प्रेरणा दी,

फ्लैग ऑफ करके वाँकथॉन को प्रारंभ किया और इतना ही नहीं लगभग १ किलोमीटर साथ में भी चले।

इस वाँकथॉन के सभी प्रतिभागियों के साथ साथ सभा अध्यक्ष मुकेश सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता सिंधी, परिषद् के परामर्शक हनुमानमल सिंधी एवं संजय सेठिया ने भी पूरे ४ किलोमीटर की पदयात्रा की।

इस कार्य को सम्पादित करने में परिषद के फिट युवा हिट युवा के संयोजक ऋषभ खटेड़ और फिट युवा हिट युवा उड़ीसा के प्रभारी सौरव चौरडिया का अथक परिश्रम रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत

समिति, तेरापंथ किशोर मंडल और कन्या मंडल का विशेष सहयोग मिला, सभी के प्रति परिषद द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

परिषद के उपाध्यक्ष शशि चोरडिया, मंत्री चिराग सिंधी, कोषाध्यक्ष विकास चोरडिया, ब्लड प्रभारी अरिहंत चोरडिया, विशाल बैद एवं किशोर मंडल प्रभारी हर्ष चोपड़ा का कार्य सम्पादन में विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम के पश्चात सभी प्रतियोगी को तेरापंथ युवक परिषद की ओर से भागीदारी प्रमाण पत्र दिया गया।

अंत में आभार ज्ञापन परिषद के अध्यक्ष विकास नौलखा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 130 लोगों ने भाग लिया।

पृष्ठ एक का शेष

जीवन अपने आप....

राज्यसभा सांसद गोविंद भाई ढोलकिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महासभा द्वारा अनेक प्रतिभागियों को पुरस्कार सम्मान से सम्मानित किया गया। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सुरेश कुमार जी गोयल को तेरापंथ संघ सेवा सम्मान, लक्ष्मीलाल बाफना को आचार्य तुलसी समाज सेवा पुरस्कार, सुरेंद्र पटावरी को तेरापंथ विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार प्राप्त कर्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य प्रवर ने आशीर्वचन देते हुए फरमाया कि सभाएं अपने-अपने क्षेत्रों

में खूब धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य संपादित करने का प्रयास करती रहें। इस जीवन में आत्म उत्थान के लिए जो कर सकें, करने का प्रयास हो। जितना हो सके दूसरों की सेवा और तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा देने का प्रयास होता रहे।

आज सम्मानित व पुरस्कृत तीनों व्यक्ति अच्छा पुरुषार्थ करते रहें, धार्मिक-आध्यात्मिक विकास का प्रयास करते रहें। तेरापंथी महासभा समाज की अद्वितीय संस्था है, वह अपने ढंग से धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य को आगे बढ़ाती रहे।

महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने श्रेष्ठ उपसभा भिलोड़ा, उत्तम

वीरपुर-बिहार व माणगांव-महाराष्ट्र, विशिष्ट उपसभा एसडी कोटे-कर्नाटक व प्रान्तीय-गुजरात को चुना गया।

सभाओं की तीन श्रेणियों में लघु के अंतर्गत श्रेष्ठ इचलकरंजी, उत्तम रेलमगरा व विशिष्ट शालिमरबाग व धुलाबाड़ी, मध्यम में श्रेष्ठ सभा भुज, उत्तम गुलाबबाग व विशिष्ट राजाजीनगर-बंगलुरु व बृहद सभाओं में श्रेष्ठ सभा गुवाहाटी, उत्तम कांकरिया-मणिनगर व विशिष्ट सभा कांदिवली-मुम्बई के नामों की घोषणा की। चयनित सभी सभा व उपसभाओं को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन महासभा के उपाध्यक्ष श्री संजय खटेड़ ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

जवानी पर रहे...

तीर्थकर तो जरा और मृत्यु से भी मुक्त हो शाश्वत सुख को प्राप्त हो जाते हैं। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित एवं साध्वी मुक्तिशशा जी द्वारा लिखित साध्वी रतनश्रीजी की जीवनी 'अप्रमत्त ज्योति' पूज्य प्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। प्रो. मिश्रीलाल मांडोत द्वारा लिखित 'आधुनिक राजस्थान की महान विभूतियां' के दूसरे भाग का लोकार्पण भी किया गया।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में

महासभा के तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में पुरस्कार एवं सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन हुआ। इस संदर्भ में तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ संघ सेवा सम्मान महासभा के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, आचार्य तुलसी समाज सेवा पुरस्कार उपासक श्रेणी व्यवस्थापक जयंतीलाल सुराणा व तेरापंथ विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार डॉ. राज सेठिया-ऑस्ट्रिया

को प्रदान किया गया। प्रशस्ति पत्र का वाचन महासभा के उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, नरेन्द्र नखत तथा समीर वकील ने किया।

महासभा के पदाधिकारियों आदि के द्वारा सम्मान/ पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह आदि समर्पित किए गए। सम्मान/ पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने आचार्यश्री के समक्ष अपने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महासभा के संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया ने किया।

शपथ ग्रहण कार्यक्रम समारोह

अमराईवाड़ी-ओढवा।

आचार्य महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री काव्यलता जी के सान्निध्य में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। तेरापंथ युवक परिषद के युवकों ने जैन संस्कारक दिनेश टुकलिया, विकास डांगी, पंकज डांगी ने विजय गीत का संज्ञान किया। जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण विधि संपादित की। तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष रमेश पगारिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष नवरत्न चिप्पड़ को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तत्पश्चात नवरत्न चिप्पड़ ने अपने पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी टीम की घोषणा कर सबको शपथ दिलाई। तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष हितेश चपलोट ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष मुकेश सिंघवी

को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई, नवनिर्वाचित अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा कर युवा शक्ति को शपथ दिलाई। साध्वी काव्यलता जी ने अपने वक्तव्य में कहा शपथ ग्रहण करने वाले कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह सबको साथ लेकर विश्वास, प्रेम, सौहार्द से काम करता है तो वह कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है।

2025 में आचार्य श्री महाश्रमण जी का चातुर्मास है उन दुर्लभ पलों को सार्थक बनाने के लिए चिंतनशील, प्रबुद्ध कार्यकर्ता की एक टीम सामने आए। साध्वी ज्योतिशशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी राहतप्रभा जी ने 'सुरंगो शासन आपारो' मधुर स्वरो से सबको भाव विभोर कर दिया। शपथ ग्रहण समारोह का कुशल संचालन रवि चंडालिया ने किया।

पाँवर ऑफ पेरेन्टिंग वर्कशाप परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला

कांदीवली।

तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित 'पाँवर आफ पेरेन्टिंग' वर्कशाप को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- आज मैं उन अभिभावकों की चर्चा कर रही हूँ जो संतान को जन्म तो देते हैं पर सही निष्पन्नता की ओर ध्यान नहीं देते। जरूरत है मदालसा और जीजाबाई की तरह अपनी संतान को सदसंस्कार भी दें। संतान का किस प्रकार सर्वांगीण विकास हो इस ओर प्रयास करें। संतान को यह सिखाएं- आज सारी सुख सुविधा है, आनन्द है, कभी कठिन परिस्थिति को भी झेलना पड़ सकता है। पर संतुलित जीवन जीने का दृढ़ संकल्प होना चाहिए।

श्रम की शिक्षा देते रहें। साध्वीश्री ने कहा- बच्चों का लालन-पालन करें, पर उन्हें श्रम की महत्ता भी बताएं। हैलिकाप्टर पेरेन्टिंग न करें उन्हें कार्य करने के लिए खुला वितान दें। संस्कृत साहित्य में कहा गया है, 5 वर्ष तक लालन-पालन करें। 10 वर्ष तक

अनुशासन करें, जब 16 वर्ष की संतान हो मित्र जैसा व्यवहार करें। उनकी निर्णयात्मक शक्ति का भी सम्मान करें। यदि उनका निर्णय या सलाह न जचें तो उसका परिष्कार करें, पर तत्काल करें, यह आवश्यक नहीं। संतान कोई गलती भी करे तो उसे फटकारने की बजाय शान्ति और मृदुता से पेश आएँ।

साध्वीश्री डॉ. मंगल प्रज्ञा जी ने इस अवसर पर उपस्थित विशद परिषद को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- अपनी संतान अच्छा बनाना चाहते हैं तो उनकी गलतियों का करेक्शन करें, उनके पास बैठकर बात करने का समय नियोजित करें।

हर बच्चे में यूनिक टैलेंट होता है। उनके हौसलों को मजबूत करते रहें। अपनी संतान के लिए आप रॉल मॉडल बनें। अच्छी जिन्दगी जीने का रहस्य समझाना हर अभिभावक का परम कर्तव्य है अध्यात्म भी यही कहता है सबके साथ सद्व्यवहार करो। एक दूसरे को आगे बढ़ाने का प्रयास करो, अपनी जिम्मेदारी समझें। साध्वी वृंद ने सामूहिक संगान किया।

❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

- आचार्य श्री महाश्रमण



रक्षाबन्धन कार्यशाला व 78वां स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

कांदिवली (मुंबई)।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली द्वारा आयोजित रक्षा बन्धन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- हर व्यक्ति अपने जीवन में स्वतंत्रता चाहता है, परतंत्र रहना कोई नहीं चाहता। प्राचीन साहित्य में कहा गया है- जो स्ववश में होता है, वह सुखी होता है और जो दूसरों के वशीभूत होता है- वह दुःख का अनुभव करता है। आज का दिन भारत के लिए गौरव का दिन है, क्योंकि भारत परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त हुआ था, स्वतंत्रता की सांस ली। अपना सब कुछ होते हुए भी भारत ने परायण का अनुभव किया। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं है। साध्वी डॉ. मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- आवश्यकता है - स्वतंत्रता अभिशाप नहीं, वरदान बने। हर भारतवासी अपने पर अपना अनुशासन करे। विवेक चेतना जागृत

करे। अध्यात्म के संदर्भ में विचार करें तो हमें असली आजादी का अनुभव करना चाहिए, वह है हमारी आत्मा की स्वतंत्रता। हमारी आत्मा अनन्त काल से कर्मों के कारण परिभ्रमण कर रही है, कर्मों की जंजीर से जकड़ी है। उसे मुक्त करने का प्रयास करें, यह सही अर्थ में स्वतंत्रता है।

कांदिवली महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने 'शुभ संकल्प सजाएं' गीत का संगान किया। किशोर मंडल एवं कन्या मंडल ने - 'अन्त्याक्षरी संगान राष्ट्र के नाम' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने - 'हम स्वतंत्र भारत के यात्री' कार्यक्रम की मोहक प्रस्तुति दी।

जैन संस्कारक शान्ति लाल कोठारी, पारसमल दुगड़ सौरभ दुधोड़िया ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबन्धन मनाने की प्रक्रिया प्रस्तुत की। साध्वी अतुलयशा

जी ने कहा- स्वच्छंदता का निरोध करना ही वास्तविक स्वतंत्रता है। मंच संचालन साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया।

रक्षाबंधन कार्यशाखा में श्रावक-श्राविका परिवार की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यशाला आयोजन से पूर्व - तेरापंथ भवन प्रांगण में ध्वजारोहण हुआ। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने राष्ट्र के प्रति सद्भाव व्यक्त करते हुए स्वर संगान किया। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका विमला दुगड़ ने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर तेयुप कांदिवली-मलाड़ ने श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं 'शंखनाद' समारोह के प्रायोजक मेघराज धाकड़ का सम्मान किया। अंत में तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी एवं मंत्री पंकज कच्छारा ने जैन संस्कारक पारसमल दुगड़, शान्तीलाल कोठारी एवं सौरभ दुधोड़िया एवं रक्षाबंधन कार्यशाला के प्रायोजक प्रकाश भेरुलाल बोहरा का आभार ज्ञापित किया।

संक्षिप्त खबर

फिट युवा, हिट युवा के अन्तर्गत योग प्रशिक्षण कार्यशाला

हुबली। अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद हुबली द्वारा फिट युवा, हिट युवा कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। जिसमें तेरापंथ युवक परिषद और किशोर मंडल के सदस्य उत्साहपूर्वक शामिल हुए। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य योग के द्वारा युवाओं में स्वास्थ्य और फिटनेस को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम में योग सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें अशोक पालगोता ने सभी को योगाभ्यास कराया और मार्गदर्शन दिया। तेरापंथ युवक परिषद हुबली ने सभी प्रतिभागियों और योग कोच अशोक पालगोता का आभार व्यक्त किया।

फिट युवा हिट युवा का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर द्वारा तेरापंथ भवन राजराजेश्वरी नगर में जुबां क्लास के माध्यम से करवाया गया। जुबां ट्रेनर प्रियंका ने सभी युवाओं को बहुत ही सरल तरीके से जुंबा करवाया। अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया। परिषद प्रभारी विशाल पितलिया ने परिषद् द्वारा किए गए इस कार्यक्रम की सराहना की। फिट युवा हिट युवा दक्षिण क्षेत्र के प्रभारी राकेश पोकरणा ने बताया कि फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत 60 बेमिसाल डे चैलेंज का आयोजन अभी सभी परिषदें कर रही हैं और आज आरआर नगर परिषद ने भी जुंबा के माध्यम से इसकी शुरुआत की। अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि हम रोजमर्रा की भाग दौड़ की जिंदगी से अपने लिए कुछ समय निकालना चाहिए फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत आप रोज अपने शरीर को एक घंटा दे चाहे वो योग करके या जुंबा करके या एक्सरसाइज करके, जिससे आप स्वस्थ रह सके। इस कार्यक्रम में लगभग 40 लोगों ने लाभ लिया। इस अवसर पर सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, सभा मंत्री गुलाब बांठिया, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन पटावरी, निवर्तमान अध्यक्ष विकास छाजेड़, तेयुप प्रबंध मंडल, प्रबुद्ध विचारक, परामर्शक गण, कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन परिषद मंत्री सुपार्श पटावरी ने किया।

दो पचरंगी से रंगारंग बना बीदासर

बीदासर। बीदासर में कई वर्षों बाद दो पचरंगियां एक साथ संपन्न हुईं। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी, 'शासनश्री' साध्वीश्री कुलप्रभा जी, 'शासनश्री' साध्वी श्री विमलप्रभाजी ने गीत, कविता एवं विचारों के द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति दी। केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकेश्या जी ने इस अवसर पर कहा कि बीदासर की मिट्टी कोई दूसरे प्रकार की है। इस मिट्टी में पराक्रम और पौरुष का विशेष प्रभाव रहा है। यहां के श्रावक दृढ संकल्प के धनी और शक्तिशाली हैं, उनके नस-नस में श्रद्धाभक्ति का मजीठी रंग चढ़ा हुआ है। आचार्य श्री कालूगणी और आचार्यश्री तुलसी के शासनकाल में बीदासर में बहुत तपस्याएं हुईं। लघुसिंह निष्क्रीडित तप की पांच परिपाटियां बीदासर में हुईं। अतः तपो भूमि बीदासर में दो पचरंगी तप होना राठौडी श्रावकों की मजबूती का परिचायक है। इस पचरंगी की उनेक विशेषताओं का वर्णन करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि इस पचरंगी में ज्ञानशाला के 7 बच्चों ने पंचोला, चोला, तेला आदि तप किया। 84 वर्षीय श्रावक ने भी पंचोला तप किया। तथा अनेक जोड़ियों जैसे मां-बेटे, बाप-बेटी, दादी-पोता, दादी-पोती, मां-बेटी, बहन-बहन ने भी इसमें भाग लिया। सर्वाधिक संख्या पंचोले तप की रही जिसमें लगभग 14 पंचोले हुए। इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वीश्री अमितप्रभाजी ने कहा कि बीदासर तपोभूमि कहलाती है, इसका साक्षात् उदाहरण आज देखने को मिल रहा है। बीदासर वासी तप के श्रेत्र में यू ही आगे बढ़ते रहें। मंगलाचरण रूपम बैगाणी ने अपने सुमधुर गीत से किया। महिला मण्डल एवं युवक परिषद् ने गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तेरापंथ सभाध्यक्ष सम्मत बैद, महिला मण्डल मंत्री भावना दुगड़ आदि ने तपस्वियों का अनुमोदन किया।

भाई-भाई, देवरानी-जेठानी सेमिनार

विलेपार्ले, मुंबई।

साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी के सान्निध्य में भाई-भाई, देवरानी-जेठानी की कार्यशाला आयोजित हुई। साध्वी शकुन्तलाकुमारी जी ने अपने अभिभाषण में कहा- जितने प्यार, सम्मान और मिठास से हम दूसरों से बात करते हैं,

उतने ही प्यार और सद्भाव से यदि हम अपने घर के सदस्यों से बोलना शुरू कर दें तो हमें स्वर्ग का सुख अपने ही घर-परिवार में मिलना शुरू हो जाएगा। कभी भी कुछ कहासुनी हो जाए तो उसे मन में नहीं रखें, बातचीत को जारी रखें। साध्वी रक्षितयशा जी ने रोचक प्रश्नों के माध्यम से परिवार में जीने की कला बताई।

साध्वी संचितयशा जी ने कहा- परिवार की सुन्दरता फर्नीचर या सजावट से नहीं बल्कि देवरानी-जेठानी और भाई-भाई के प्रेम, त्याग, सहिष्णुता और संतुष्टि से होती है। रेखा कोठारी और नेहा कोठारी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। तेरापंथ युवक परिषद विलेपार्ले के अध्यक्ष महेंद्र वडाला ने आभार ज्ञापन किया।

फिट युवा, हिट युवा के अन्तर्गत योगाभ्यास का आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत 60 दिवसीय फिटनेस चैलेंज में योगा और जुंबा कार्यक्रम का आयोजन विजयनगर स्थित अर्हम भवन में किया गया।

अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सबका स्वागत किया। अभातेयुप उपाध्यक्ष 'प्रथम' पवन मांडोत ने बैंगलोर स्तरीय फिट युवा हिट युवा कार्यक्रम में सभी का उत्साह वर्धन किया। ट्रेनर खुशबू बेंगानी ने फिटनेस ट्रेनिंग हेतु योगा

और जुंबा का अभ्यास करवाया, साथ ही अभातेयुप निर्देशित एक्सरसाइज भी करवाई।

आज के विशेष सत्र में लगभग 70 युवाओं ने भाग लिया था, अभातेयुप के फिट युवा हिट युवा आयाम के साउथ कन्वेनर राकेश पोखरणा ने युवाओं को उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम में प्रतिदिन जुड़ने का आह्वान किया।

इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, तेयुप गांधीनगर अध्यक्ष विमल धारीवाल, टी दासरहल्ली अध्यक्ष कन्हैया लाल गांधी, तेयुप प्रबंध मंडल से विकास बांठिया, परामर्शक, स्थानीय

संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यकारिणी, युवा साथी, महिलामंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल की सहभागिता रही।

ट्रेनर खुशबू का सम्मान जैन पट्ट से किया गया। ज्ञातव्य है कि तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर प्रतिदिन फिट युवा हिट युवा 60 साल बेमिसाल में भागीदारी कर रही है जिसमें निरंतर संयोजक प्रकाश पगारिया, सुशील गांधी, सह संयोजक विमल पारख, दिनेश मेहता का विशेष श्रम लग रहा है। कार्यक्रम का आभार मंत्री संजय भटेवरा ने किया।



संक्षिप्त खबर

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का आयोजन

हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा किया गया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का प्रथम आयोजन हावड़ा हिंदी हाई स्कूल में किया गया। कार्यक्रम दो ग्रुप में आयोजित हुआ जिसमें चित्रकला, भाषण, कविता, निबंध एवं गायन की प्रतियोगिता आयोजित हुई। हावड़ा हिंदी हाई स्कूल के लगभग 128 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में उम्मेद राखेचा, सुनीता बैद, विकाश कोचर, रोहित बैद, जयश्री राखेचा का श्रम रहा।

हिट युवा फिट युवा कार्यशाला

विक्रौली (मुंबई)। अभातेयुप के तत्वावधान में फिट युवा-हिट युवा आयाम के अन्तर्गत रवींद्रनाथ टैगोर गार्डन में तेरापंथ युवक परिषद विक्रौली ने वर्क आउट सेशन आयोजित किया। मुख्य प्रशिक्षक चैनसिंह राजपुरोहित ने व्यायाम करवाए। उन्होंने सूर्य नमस्कार और आहार योजना के बारे में अपने विचार साझा किए। तेयुप के अध्यक्ष मनीष बोहरा ने स्वागत अभिन्दन और धन्यवाद ज्ञापित किया।

योग शिविर का आयोजन

उत्तर कोलकाता। अभातेयुप द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा आयाम के अंतर्गत उत्तर कोलकाता स्तरीय द आर्यन्स स्कूल में योग शिविर का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कोलकाता द्वारा किया गया। योग शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई। कोषाध्यक्ष बिनोद आंचलिया ने सभी का स्वागत किया और बताया कि योग से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन प्राप्त होता है। नियमित योगाभ्यास से तनाव कम होता है और संपूर्ण स्वास्थ्य में सुधार होता है। द आर्यन्स स्कूल में शुरू हुए इस योग शिविर में 60 छात्रों और 5 शिक्षकों ने भाग लिया। सह मंत्री विरेंद्र बिनायक ने द आर्यन्स स्कूल के प्रबंधन, शिक्षकों और प्रशिक्षकों का आभार व्यक्त करते हुए शिविर का समापन किया।

टीटीएफ कार्यशाला का आयोजन

हुबली। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में आज तेरापंथ युवक परिषद हुबली के द्वारा टीटीएफ कार्यशाला का आयोजन किया गया। जय चोरडिया ने बहुत ही सरल और आसान तरीके से आपदा जैसी परिस्थिति को कैसे हमें संतुलित रहकर कार्य करने चाहिए, ब्लीडिंग, फ्रैक्चर, बर्न, फ्लड जैसी आपदा में हमें क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए, इस बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम की कुशल व्यवस्था किशोर मण्डल संयोजक सार्थक कोठारी और सह संयोजक रौनक लुनिया ने की। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष विशाल बोहरा ने सबका स्वागत किया। तेरापंथ सभा, महिला मण्डल, युवक परिषद और किशोर मण्डल एवम् समाज से 60 सदस्यों की उपस्थिति रही।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में ध्वजारोहण

सुजानगढ़। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ठाणा पांच के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में ध्वजारोहण किया गया। प्रसन्न संजय भुतोडिया, अशोक सिंघी, केसरीचंद्र मालू, तरुण लोढ़ा ने ध्वजारोहण किया। सभा सदस्य, महिला मंडल, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, कन्या मंडल ने बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया। तत्पश्चात राष्ट्र गान का संगान किया गया।

दंपत्ति शिविर का भव्य आयोजन

पालघर।

साध्वी डॉ. पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में दंपत्ति शिविर का भव्य आयोजन किया गया। शिविर में सफाला, केलवे रोड, बोईसर, मनोर, मलाड (मुम्बई) आदि क्षेत्रों से 70 दंपत्ति शरीक हुए।

साध्वीश्री द्वारा णमोकार मंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम के संयोजक ने मंगलाचरण किया। शिविर में सुखी परिवार का प्रतिरूप हाथों से निर्मित घर का अनावरण किया गया।

घरों को सुरक्षित रखने वाली संस्कारों की छतरी खोली गयी। सभा अध्यक्ष चतर

तलेसरा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। रिश्तों में मिठास कैसे भरे इस विषय पर साध्वी पीयूषप्रभाजी ने अपने संबोधन में कहा- जो व्यक्ति जीवन में बोल देता है वह अपने रिश्तों में मिठास बढ़ा देता है। उनके जीवन का सफर सुखमय बन जाता है। व्यक्ति अपने जीवन में बहुत कुछ पाना चाहता है पर अपना अमूल्य समय केवल चीजों को प्राप्त करने में बर्बाद कर देता है। अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को सीमित करें तो समस्याओं का समाधान हो सकता है। दंपत्य जीवन को विवाद का विषय न बनाएं। अनेकान्त दृष्टि को अपना कर रिश्ता मधुर, आनंदमय

बन सकता है। साध्वी भावनाश्री जी ने परिवार के अक्षरों का विश्लेषण कर परिवार का महत्व बताया।

साध्वी सुधाकुमारी जी ने भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी दीप्तिशशीजी ने सुखमय जीवन के वाक्य को अर्थपूर्ण बनाने का व्याकरण बताया।

महासभा कार्यकारिणी सदस्य दिलीप राठोड़ ने भावों की प्रस्तुति दी। शिविर के प्रायोजक खुबीलाल सिंघवी का सभा की ओर से सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष संगीता चपलोट ने किया। संचालन दीपिका बदामिया बाफना ने किया।

'ड्यूटी इज ब्यूटी' कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर।

साध्वी उदितयशाजी ठाणा ४ के सान्निध्य में एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर के तत्वावधान में प्रशिक्षिका बहनों के लिए 'ड्यूटी इज ब्यूटी' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री ने कर्तव्य का तात्विक अर्थ बताते हुए कहा- जो करने योग्य है, वह कर्तव्य है। जो अपने कर्तव्य को नहीं जानता उसके जीवन का अनिष्ट भी हो सकता है। प्रशिक्षिकाओं का यह कर्तव्य है कि वह बच्चों की क्षमता को पहचान कर

उन्हें आगे बढ़ाएं, ज्ञानशाला में आने के लिए बच्चों को प्रेरणा दें, इसके लिए अभिभावकों से संपर्क करें। ज्ञानशाला रूपी यज्ञ का विस्तार करने के लिए नई प्रशिक्षिकाएं भी तैयार करें।

प्रशिक्षिकाएं अपने परिवार को भी नजरअंदाज ना करें, वे परिवार से जुड़कर संघ का काम करें और सदा गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करें।

साध्वी भव्ययशा जी ने कहा प्रशिक्षिकाएं कर्तव्य की पहचान करें, उसका गौरव गान करें और उसको सर्वोपरि मान दे। प्रशिक्षिकाएं बच्चों

के प्रति राग-द्वेष का भाव ना लाएं। आंचलिक संयोजक माणक संचेती ने परिपत्र एवं महासभा द्वारा प्रदत्त नियमों की जानकारी दी।

महासभा प्रभारी प्रकाश लोढ़ा ने प्रशिक्षिकाओं को और अधिक सजग एवं जागृत होकर काम करने की प्रेरणा दी।

क्षेत्रीय संयोजिका नीता गादिया ने ज्ञानशाला संबंधी जानकारी प्रदान की। साध्वीश्री के द्वारा ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे गए। विजेताओं को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस कार्यशाला में लगभग 75 प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया।

रक्तदान शिविरों का आयोजन सफलता से संपन्न

हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा जुलाई महीने में लगातार 31 दिनों में 43 रक्तदान शिविर आयोजित कर 1500 यूनिट से अधिक रक्त संग्रह कर ब्लड बैंक को दिया गया।

तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिन्दन नाहटा के नेतृत्व में तेयुप ने संपूर्ण जुलाई महीने में पूरे हैदराबाद में अलग अलग स्थानों पर रक्तदान शिविर आयोजित किए हैं जिनमें कॉलेज, इंडस्ट्रीज एवम कॉरपोरेट एवं सोसायटीज के माध्यम से जन जन में

जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया। रक्तदान शिविरों की कड़ी में नारी शक्ति विशेष रक्तदान शिविर का भी आयोजन डीवी कॉलोनी भवन में किया गया, जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

इस कैम्प में तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, टी पी एफ, एमआई उड़ान सहयोगी संस्था के रूप में जुड़ी। Ollvin Wires & Cables इस आयोजन के मुख्य प्रायोजक थे और कंपनी के लक्ष्मीनिवास झँवर ने तेयुप द्वारा किए जा रहे कार्यों की भरपूर प्रशंसा की। विभिन्न शिविरों में मनीष पटावरी, विनय नाहटा, आशीष दक, सौरभ भंडारी, जिनेन्द्र बैद, विशाल आंचलिया, रौनक दुगड़, शुभम बंबोली,

दर्शन गेलडा एवम योगेश गेलडा ने कैम्प आयोजन में अपनी विशेष भूमिका निभाई। तेलंगाना संयोजक आशीष दक एवं राहुल श्यामसूखा, आयाम संयोजक मनोज जैन एवं कार्यक्रम संयोजक श्रेणिक गोलछा का पूरे माह चलने वाले इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष श्रम एवं सहभागिता रही। अमित नाहटा, राहुल गोलछा ने संपूर्ण माह सुचारु रूप से प्रिंट का कार्यभार संभाला।

अरिहंत गुजरानी, कुशल भंशाली ने डिजाइनिंग एवम प्रिंटिंग में अपनी सेवाएं प्रदान की। प्रकाश दुगड़ ने संपूर्ण कार्यक्रम का डाटा मैनेजमेंट कार्य संभाला। सभी रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

समय, समझ और शक्ति का सदुपयोग ही नवोत्थान में है सहायक महाराष्ट्र स्तरीय 'शंखनाद युवाशक्ति के नवोत्थान का' का भव्य आयोजन



कादिवली (मुंबई)।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेयुप मलाड द्वारा आयोजित महाराष्ट्र स्तरीय 'शंखनाद युवा शक्ति के नवोत्थान का' नामक दायित्व बोध कार्यशाला में सान्निध्य प्रदान करते हुए विशाल युवा समाज और उपस्थित विशाल श्रोता समाज को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉक्टर मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- आज का शंखनाद युवा शक्ति को जागृत करने का शंखनाद है। हर युवा के पास समय है, समझ है और शक्ति है। जरूरत है इन तीनों के सम्यक नियोजन की, समय, समझ और शक्ति का सदुपयोग करने का संकल्प ही नवोत्थान करने में सहायक बन सकता है। साध्वी श्री जी ने श्रमण श्रेणी में विदेश यात्रा के दौरान देखी गई जापान हिरोशिमा की दिल दहलाने वाली घटना का जिक्र करते हुए कहा- प्रयोक्ता ने शक्ति का गलत प्रयोग किया, दहशत फैल गई। ऐसा शक्ति

का दुरुपयोग मानवीयता नहीं है। युवा अपनी शक्ति का सृजनशीलता में प्रयोग करे। इस अवसर पर विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वी श्री डॉ मंगल प्रज्ञा जी ने कहा- आर्थिक सम्पन्नता ही जीवन का मुख्य ध्येय नहीं है। पैसा जीवन में बहुत कुछ है, पर याद रखें सब कुछ नहीं है। यह चिन्तन आपको आनन्द प्रदान करेगा। युवाशक्ति इस बात को न भूलें। आप सभी जैन, आपके अभिभावकों बुजुर्गों और जन्म दाता, माता पिता की बदौलत हैं। आपकी अगली पीढ़ी जैन सरकारों से पल्लवित हो, यह आवश्यक है। 'डिजिटल डिटोक्स' को अपनाएं। जीवन शैली को बदलें, पारिवारिक जीवन को सुखमय शान्तिमय बनाने के लिए गलत आदतों से बचें। हमारी परिषद को विशेष प्रेरणा है- भोजन करते समय, गाड़ी चलाते समय और रात्रि 11 बजे बाद मोबाईल का प्रयोग न करें। आज की युवा पीढ़ी सशक्त बने, अपने पारिवारिक सुदृढ़ संस्कार संघीय संस्कारों को पुष्ट बनाए रखें। समाज

में शादी पार्टी के अवसरों पर जो शराब आदि का प्रचलन चल रहा है, उस पर ब्रेक लगाया जाए, सही दिशा की ओर प्रस्थान हो। साध्वीश्री के आह्वान पर उपस्थित विशाल परिषद ने संकल्प स्वीकार किए। साध्वी श्री ने आगे कहा- अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। प्रवाहपाती न बनें, अपनी विवेक चेतना को जागृत करने के लिए यह शंखनाद हुआ। इसकी गूंज हर व्यक्ति तक पहुंचे। हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें गुरु महाश्रमणजी जैसी विकासमयी अनुशासना प्राप्त है। अपेक्षा है, हम सबका दायित्व है, संघ के विकास में अपनी शक्ति का नियोजन करते रहें। गुरु दृष्टि के प्रति समर्पित होकर कार्य करते रहे। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा - युवाशक्ति का संकल्प प्रकाश की तरह रोशनी बिखरने जैसा हो, कदम निरंतर गतिमान रहे, मंजिल अवश्य मिलेगी। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभाजी

ने र्युवा शक्ति का वर्धन हो, भिक्षु का शासन रोशन होर गीत का संगान किया। तेयुप मलाड और तेयुप कादिवली के सदस्यों ने विजय- गीत से मंगलाचरण किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने कार्यक्रम के उद्घाटन की घोषणा की एवं श्रावक निष्ठापत्र का वाचन किया। तेरापंथ युवक परिषद, कादिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी एवं तेरापंथ युवक परिषद, मलाड अध्यक्ष जयंती मादरेचा ने स्वागत संभाषण किया। तेरापंथ सभा मुंबई अध्यक्ष माणक धींग ने सम्पूर्ण परिषदों के विकास की मंगल कामना करते हुए स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद कोषाध्यक्ष नरेश सोनी ने भावाभिव्यक्ति दी। अपने अध्यक्षीय भाषण में रमेश डागा ने कहा - आज साध्वीश्री जी की प्रेरणा से 'शंखनाद' के रूप में भव्य कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। युवाशक्ति को बड़ी तादाद में देखकर मुझे गौरव की अनुभूति होती है। कामना करता हूँ युवाशक्ति

निरंतर जुड़ती रहे, हमारा काफिला बढ़ता रहे। इस अवसर पर उमा कोठारी ने रलाइफ स्टाइल एवं हेल्थर विषय पर विचार व्यक्त किए। पार्थ जिन्दल ने बिजनेस मोटिवेशन हेतु 'Redeveloping opportunities in India' विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रशान्त तातेड़, शाखा प्रभारी एवं रवि डोसी ने दोनों वक्ताओं का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में संविधान से श्रम का आधार पर अभातेयुप महामंत्री अमित नाहटा ने विचारों को अभिव्यक्त किया। मुंबई की उपस्थित सभी तेयुप परिषद के अध्यक्षों एवं उनकी टीम को राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने शपथ दिलाई। तेरापंथ युवक परिषद कादिवली मंत्री पंकज कच्छारा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद सहमंत्री भूपेश कोठारी ने किया।

बारह व्रती बनने से संकल्पित हिंसा से बचा जा सकता है

इचलकरंजी। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी आदि ठाणा- 5 के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशित बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला तेरापंथ भवन में तेयुप इचलकरंजी द्वारा आयोजित की गई। साध्वी श्री ने भगवान महावीर द्वारा गृहस्थ के लिए प्रदत्त आगार धर्म के बारे में बताते हुए श्रावक-श्राविका समाज को बारह व्रती बनने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने आवश्यक हिंसा के अलावा संकल्पजा स्थूल हिंसा का कुछ

अपवादों के साथ त्याग की प्रेरणा दी। छोटे-छोटे नियमों को संकल्प लेकर कर्म निर्जरा की प्रेरणा प्रदान की। 'शासनश्री' साध्वी मंजूरेखाजी ने अपने वक्तव्य में सभी श्रावक-श्राविकाओं को बारहव्रती बनने की प्रेरणा दी। इसके पश्चात तेयुप इचलकरंजी अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने स्वागत वक्तव्य देते हुए, व्रती बनने की शुभकामना प्रेषित की। तेयुप मंत्री अंकुश बाफना ने आभार प्रकट किया। कार्यशाला में लगभग 80 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

'शिक्षाप्रद कहानी सुनाओ' प्रतियोगिता का आयोजन

साउथ हावड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 'शिक्षाप्रद कहानी सुनाओ' प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा प्रेक्षा विहार में किया गया। 6 से 9 वर्ष व 10 से 13 वर्ष के दो वर्गों में आयोजित प्रतियोगिता में 13-13 प्रतिभागियों ने 3 मिनट की तय समय सीमा में अपनी प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता के निर्णायक राकेश संचेती व संतोष बांठिया थे। प्रथम वर्ग में प्रथम

मायरा चिंडालिया, द्वितीय राशिका सिंधी, तृतीय प्रियांशु बरडिया रहे। द्वितीय वर्ग में प्रथम प्रज्ज्वल सिंधी, द्वितीय ऋषभ बैद व जीत बेगवानी, तृतीय स्पर्श बोहरा रहे। परिणाम की घोषणा निर्णायक राकेश संचेती ने की। कार्यक्रम में आशीर्वचन फरमाते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है कथा। कथा अमृत रसायन है। जन मानस की सुप्त चेतना को जागृत करने वाली शक्ति है। नीरस विषय में भी सरसता संचारित करने वाली ऊर्जा है। पुराने समय में दादा-दादी, नाना-नानी बच्चों

को कहानी सुनाते थे। कथा के माध्यम से बच्चों को संस्कार देते थे। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ किशोर मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद उपाध्यक्ष पारस बरडिया ने दिया। आभार ज्ञापन सहमंत्री राहुल दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ किशोर मंडल संयोजक संजोग पारख ने किया। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा प्रायोजक संपत भंसाली व निर्णायकों का सम्मान किया गया। विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।



78वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद द्वारा 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में प्रथम चरण - कन्या सुरक्षा सर्कल शाहीबाग व द्वितीय चरण - कन्या सुरक्षा सर्कल कांकरिया में आयोजित हुआ।

सर्वप्रथम ज्ञानशाला के बच्चे और महिला मंडल के द्वारा रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ शाहीबाग में तेरापंथ सेवा समाज के ट्रस्टी सज्जन सिंघवी ओर कांकरिया में संरक्षिका सावित्री लुनिया ने नमस्कार महामन्त्र से किया। शाहीबाग चीफ गेस्ट

- डॉ. श्रेया चौधरी, काकरिया मुख्य अतिथि डॉ. अनिल रावल, रायचंद लुनिया, महासभा के परामर्शक, सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारीगण की उपस्थिति में ध्वजारोहण व राष्ट्रगान का संगान किया।

महिला मंडल की बहनों एवं परामर्शक रायचंद लुनिया ने सुमधुर स्वर में देशभक्ति गीत का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्ष हेमलता परमार ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं सभी को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामना प्रेषित की। अभातेममं कन्या मंडल प्रभारी अदिति सेखानी, क्षेत्रीय प्रभारी नीतू बैद, कार्यकारिणी सदस्य चांद छाजेड़, वर्षा लूनिया, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री

बबीता भंसाली एवं ज्ञानशाला से मुदित लुनिया अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। समाज के ट्रस्टी सज्जन सिंघवी, युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष कपिल पोखरणा ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में शुभकामनाएं प्रेषित की।

सभी सभा संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों ने गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन शाहीबाग में सहमंत्री सुमन कोठारी एवं कांकरिया संयोजिका मन्जु दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन शाहीबाग में पूर्व मंत्री अनीता कोठारी ने और कांकरिया में कार्यसमिति सदस्य रचना बोहरा ने किया।

रक्तदान शिविर एवं ब्लड शुगर कैंप का आयोजन

साउथ कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की शाखा परिषद् तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता द्वारा एंटाली अजाना संघ एवं हैल्थ प्वाइंट क्लीनिक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष मोहित बैद, मंत्री कुलदीप लूनिया, कार्यकारिणी सदस्य रोहित बैद, जिनेंद्र सुराना, अंकित दुगड़ एवं नरेंद्र सिरौहिया की विशेष उपस्थिति रही। कुल 51 यूनिट रक्तदान, 52 शुगर टेस्ट और 26 ईसीजी टेस्ट हुए। एमएलए सरन कमल साहा, शिविर में विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे।

पैंसठिया का देखिए चमत्कार, कीजिए तीर्थकर प्रभुवर की जय-जयकार

उदयपुर।

डॉ. साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान कार्यक्रम का समायोजन हुआ।

साध्वी श्री ने कहा कि पैंसठिया यंत्र का करें संगान, जिसमें है तीर्थकर प्रभु का गुणगान। कोई भी जाप कम से कम 43 दिन तक करना चाहिए। जिस जाप का कोई समयवार नहीं है उसे रविपुष्य, गुरुपुष्य या दीपावली और शुभ मुहूर्त, अबूझ मुहूर्त में प्रारंभ कर सकते हैं। जिस मंत्र में दिशावार समय बताया गया है उस आधार से करें। पने आगे कहा कि जीवन की हर समस्या का समाधान करता है

पैंसठिया छंद यंत्र अनुष्ठान। पैंसठिया छंद एक ऐसा यंत्र है जो शांति, समाधि, सुयश की दौलत देता है। कई बार जहां दवा काम नहीं करती वहां दुआ चमत्कार कर देती है। मेडिसिन के साथ मेडीटेशन पर फोकस करें। यह यंत्र दुआ की ताकत देता है। साध्वी वृंद ने गीत का संगान किया। स्वस्तिक के आकार में 131 जोड़ों ने अनुष्ठान में भाग लिया। साध्वी मुक्ताप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने 'पैंसठिया- द पाँवर फुल मैजिक शो' शब्द चित्र के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ सभा के मंत्री अभिषेक पोखरणा ने सभी का स्वागत किया और आभार ज्ञापन सभाध्यक्ष कमल नाहटा ने किया।

फिजिकल एंड मेंटल हेल्थ काउंसलिंग सेमिनार का आयोजन

गुवाहाटी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कैसर जागरूकता अभियान के तहत फिजिकल एंड मेंटल हेल्थ काउंसलिंग सेमिनार का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा बि बरुआ कैसर इंस्टिट्यूट के सहयोग से तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने अपने वक्तव्य से सभी

का स्वागत किया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने फरमाया कि हमें अपनी सोच व विचारों को हमेशा सकारात्मक रखना चाहिए रिश्तों में कभी नकारात्मकता नहीं लानी चाहिए। जिससे कि हमारा मानसिक स्वास्थ्य हमेशा स्वस्थ रहे। डा. चंदामिता बरुआ ने मेंटल हेल्थ के बारे में विस्तार से बताया तथा इसे स्वस्थ रखने के कई टिप्स बताए। डॉ. चावेरी आचार्य ने पुरुषों व महिलाओं में विशेष रूप से होने वाले कैसर के बारे में जानकारी दी एवं सभी को जागरूक रहने के लिए कहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया।

'आर्ट इन हार्ट' कार्यशाला

कांटाबांजी। महातपस्वी युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षांतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'आर्ट इन हार्ट' कार्यशाला का आयोजन हुआ।

समणी जिनप्रज्ञाजी ने बड़े ही रोचक तरीके से लोगों को जोड़कर उनके मध्य छिपे कलाकार की खोज की एवं उनके सपनों को नया रूप देने का प्रयास कर कार्यक्रम को अत्यंत आकर्षक बनाया।

समणी जी ने कहा कि हर परिस्थिति को अपना कर, उसमें अपने आपको एडजस्ट कर हम सफल हो सकते हैं। दूसरों के गुणों को, रुचियों को अपना कर हम अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

बोलती किताब

वर्तमान में जीए



मानसशास्त्र का अध्ययन एक मनोवैज्ञानिक के लिए जितना आवश्यक है उतना ही ध्यान-साधक के लिए आवश्यक है। प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करने वाला चेतना के विभिन्न स्तरों को जाने बिना अन्तस्चेतना की शक्तियों को जागृत नहीं कर सकता। ध्यान का प्रयोजन है—आंतरिक चेतना में विद्यमान शक्तियों का विकास और उनका उपयोग।

भावक्रिया का अभ्यास बढ़े:- कार्य के प्रति सर्वात्मना समर्पित हुए बिना उसका परिणाम अच्छा नहीं आता। इसमें शक्ति अधिक क्षीण होती है, अनावश्यक व्यय होती है और काम पूरा नहीं होता। अतः हम जिस समय जो काम करें, उस समय हमारा शरीर और मन-दोनों साथ-साथ चलें। दोनों की सहयात्रा हो।

मूल प्रश्न है - जीवन कैसे बदले ? इसके समाधान में कहा गया कि अध्यात्म की यात्रा पर चलने से जीवन बदल जाता है। बदलने का सबसे बड़ा उपाय है-आत्मा को आत्मा के द्वारा देखना। जब तक भीतर नहीं देखा जाता, तब तक बदलाव नहीं होता, रूपांतरण नहीं होता।

चेतना का विकास:- अनुभव की चेतना जागृत होने पर, सुख-दुःख की संवेदनाओं से ऊपर उठने पर सुख-दुःख को भोगता हुआ भी व्यक्ति तटस्थ रहता है। वह न अपने को सुखी मानता है और न अपने को दुःखी मानता है।

वर्तमान में जीना:- श्वास को देखने का अर्थ है समभाव में जीना। श्वास को देखने का अर्थ है वीतरागता के क्षण में जीना, राग-द्वेष-मुक्त क्षण में जीना। जो व्यक्ति श्वास को देखता है, उसका तनाव अपने आप विसर्जित हो जाता है। जो वर्तमान में जीता है, उसका तनाव अपने-आप विसर्जित हो जाता है।

चेतना-जागरण के लिए ऊर्जा की ऊर्ध्वयात्रा करनी होती है। ऊर्जा का प्रवाह नीचे की ओर जाता है तब काम-चेतना का विकास होता है। ज्ञान-चेतना का विकास ऊर्जा की ऊर्ध्वयात्रा होने पर हो सकता है। ध्यान का अभ्यास ऊर्जा को ऊपर की ओर ले जाने का अभ्यास है।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

आत्मा को कर्मों से हल्का बनाती है तपस्या

शहादा।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी प्रज्ञाश्रीजी आदि ठाणा 4 की सन्निधि में तीन पचरंगी व एक नौ के थोकड़े का प्रत्याख्यान हुआ। पचरंगी तप में शहादा के अतिरिक्त नासिक, साकरी, पिंपलनेर, दौंडाईचा, सारंगखेड़ा, शिरपुर, बोराला, आदि शहादा चोखले के श्रावक-श्राविकाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। साध्वी प्रज्ञाश्रीजी ने प्रेरणा देते हुए

कहा कि तपस्या संघ की नीवों को मजबूत बनाती है व आत्मा को कर्मों से हल्का बनाती है। चातुर्मास विशेष तपस्या का समय होता है। इस अवसर पर साध्वी सरलप्रभा जी ने विशेष प्रेरणा देते हुए आगे बढ़ने का उत्साह बढ़ाया। साध्वी विनयप्रभाजी और साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान किया। सभा अध्यक्ष कैलाश, दिलीप, ऋषभ गेलड़ा, पिंपलनेर से स्वरूप गोगड़ ने भी तपस्वियों के तपस्या की अनुमोदना की।

❖ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं- मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।
— आचार्य श्री महाश्रमण

गुण और मूल स्थान के संदर्भ में लोभ को कम करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

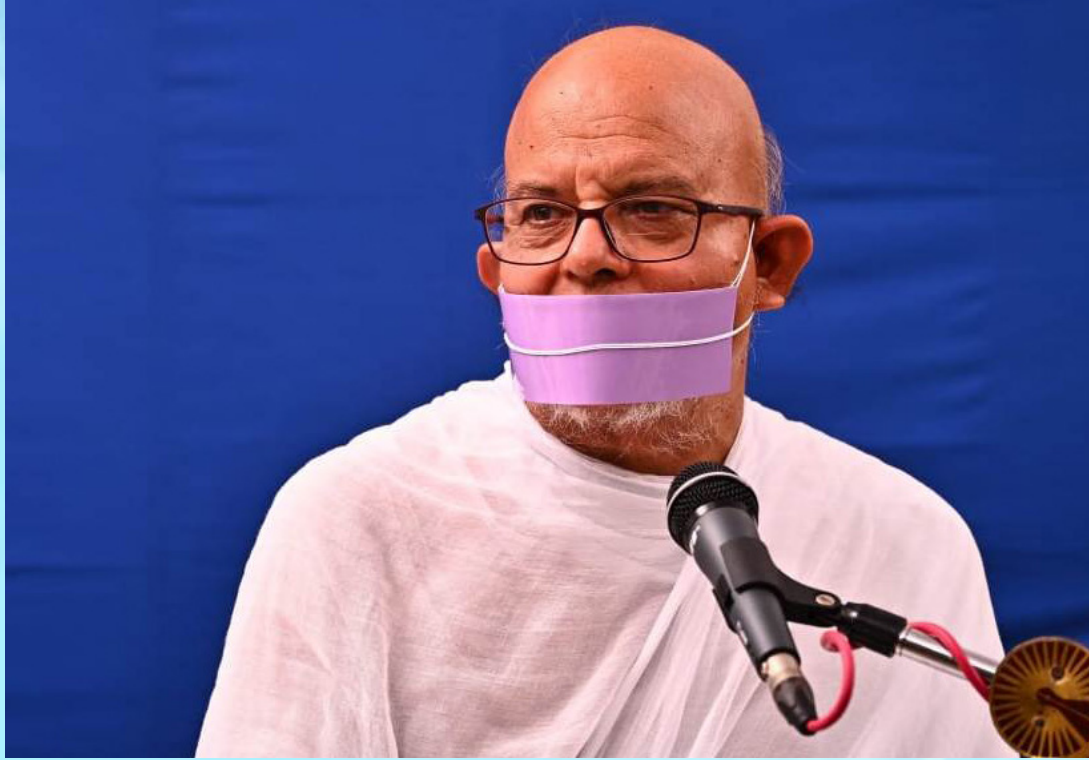
सूरत।

12 अगस्त, 2024

ज्ञान के महासागर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आयारो आगम की अमी वर्षा करते हुए फरमाया कि जो गुण है वह मूल स्थान है, जो मूल स्थान है वह गुण है। इंद्रिय विषय गुण कहलाते हैं। हमारे पास पांच ज्ञानेंद्रियां हैं और पांच कर्मेंद्रियां भी होती हैं। श्रोत्र, चक्षु आदि पांच को ज्ञानेंद्रिय कहा जा सकता है। श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है शब्द और उसका व्यापार है सुनना।

चक्षु इंद्रिय का विषय है रूप और व्यापार है देखना। घ्राणेन्द्रिय का विषय है गंध और उसका व्यापार है सूंघना। रसनेन्द्रिय का विषय है रस और उसका व्यापार है चखना। स्पर्शनेन्द्रिय का विषय है स्पर्श और उसका व्यापार है छूना। प्रत्येक इंद्रिय का अपना-अपना विषय है और अपना-अपना व्यापार है। ये मूल स्थान लोभ के निमित्त बनते हैं। इन विषयों के प्रति प्राणी को आकर्षण हो सकता है।

चार कषायों में चौथा अंग लोभ है। मोहनीय कर्म के मूल दो भेद हैं- चारित्र मोहनीय और दर्शन मोहनीय। चारित्र



मोहनीय की पच्चीस प्रवृत्तियां और दर्शन मोहनीय की तीन प्रवृत्तियां हैं। यह मोहनीय कर्म का परिवार है। आठ कर्मों में जीव के पाप लगाने में जिम्मेदार कोई है तो वह मोहनीय कर्म है। शेष तीन घाति कर्म आत्मा को मलिन बना सकते हैं। ये तो अपना काम कर देते हैं, पर

इनको लगाने वाला मोहनीय कर्म ही है। चार घाति कर्म एकांत अशुभ हैं, पाप हैं। चार अघाति कर्म पुण्यात्मक भी हैं और पापात्मक भी हैं।

आठ कर्मों में 75% तो पाप कर्म हैं, 25% पुण्य कर्म हैं। इस तरह 8 कर्मों में पुण्य-पाप को जान सकते हैं।

लोभ के आधार पर इंद्रिय विषय बनते हैं। दसवें गुणस्थान तक लोभ रहता है। लोभ साधुओं में भी रह सकता है, प्रमाद रूप में लोभ हो सकता है। गृहस्थों में भी पदार्थ के प्रति लोभ जागृत हो सकता है। मान, प्रतिष्ठा, पद में भी लोभ की चेतना काम कर सकती है। व्यवस्था के

संदर्भ में पद की अपेक्षा भी होती है, पद से पावर मिलता है और पावर से काम हो सकता है, इससे कार्य का संचालन सुचारु रूप से हो सकता है। पद से आदमी की शोभा होती है तो आदमी से पद की शोभा होती है। प्राणी लोभ के कारण हिंसा में जा सकता है, झूठ बोल सकता है, हमारी इंद्रिय विषयों के प्रति अनासक्ति रहे, ज्ञाता द्रष्टा भाव रहे, ज्यादा लोभ में न जाएं। हम गुण और मूल स्थान के संदर्भ में लोभ को कम करने का प्रयास करें।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि आध्यात्मिक जगत में भगवान और भक्ति का संबंध चल रहा चला आ रहा है। भक्ति के साथ अध्यात्म की मनोकामना जोड़ने से उसमें पवित्रता बनी रहती है। कामना तीन प्रकार की बताई गई है- अधम, मध्यम और उत्तम।

यश-कीर्ति प्राप्त करने की कामना नहीं रहनी चाहिए, अध्यात्म की प्राप्ति की कामना करना ही श्रेष्ठ कामना होती है। बालिका प्रिया सोनी ने चौबीसी के गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धुआं बनकर लंबा जीवन जीना महत्वपूर्ण नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

13 अगस्त, 2024

धर्म दिवाकर आगम व्याख्याता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आयारो आगम की व्याख्या करते हुए फरमाया कि आयारो के दूसरे अध्याय में कहा गया है- आदमी जन्म लेता है और जीवन जीता है। किसी का जीवन काल कभी लंबा या मध्यम होता है तो किसी का अल्प। जन्म और मृत्यु का गहरा संबंध होता है। जन्म विहीन मृत्यु नहीं और मृत्यु विहीन जन्म नहीं होता। आयुष्य कर्म का अपना नियम है कई उत्तम पुरुषों का आयुष्य निरुपकम होता है, अर्थात् उनकी अकाल मृत्यु नहीं होती। देवता और नारकी का आयुष्य निरुपकम वाला होता है। कई मनुष्यों का आयुष्य अल्प होता है।

जीवन कितना लंबा है, इसकी अपेक्षा कैसे जीना और क्या करना यह महत्वपूर्ण है। यदि अल्प आयुष्य वाला व्यक्ति अच्छा धार्मिक जीवन जीता है, अच्छा कार्य करके जाता है तो वह श्रेयस्कर हो सकता है। अच्छा जीवन

जीना श्रेयस्कर होता है, धुआं बनकर लंबा जीवन जीना महत्वपूर्ण नहीं है। कितना जीवन होगा यह हमारे हाथ की बात नहीं, यह तो भाग्य पर आधारित हो सकता है। पर कैसे जीना, इसमें पुरुषार्थ की प्रधानता है। पुरुषार्थ हमारे हाथ में है, भाग्य हाथ में नहीं है। हम अच्छा पुरुषार्थ कर अच्छा जीवन जीने का प्रयास करें।

हमारी दो इंद्रियां कान और आंख में हास हो सकता है। घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय में ज्यादा हीनता नहीं आती। आयुष्य में कमी आ सकती है, आंख या कान की शक्ति में कमी आ सकती है। हमारे जीवन में कान की अपेक्षा आंखों का ज्यादा महत्व है। अन्य कार्यों के साथ अध्यात्म भी जीवन में हो तो यह सफलता की बात हो सकती है।

पूज्यप्रवर ने गजसुकुमाल आख्यान के माध्यम से समझाया कि संतों का घर में आना बड़े भाग्य की बात होती है मानो कल्पवृक्ष घर में आ गया हो।

पूज्यप्रवर ने विभिन्न तपस्याओं का प्रत्याख्यान करवाया।



जैन विश्व भारती द्वारा आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में समण संस्कृति संकाय द्वारा वर्ष 2024 का गंगादेवी

सरावगी जैन विद्या पुरस्कार विमला डागलिया को प्रदान किया गया। इस संदर्भ में विमला डागलिया ने अपनी

भावाभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम का संचालन जैन विश्व भारती के महामंत्री श्री सलिल लोढ़ा ने किया।

आत्म कल्याण के लिए निवृत्ति की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती का साहित्य विभाग है साहित्य का भंडार

सूत।

14 अगस्त, 2024

तेरापंथ सरताज युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी दैनिक प्रवचन के अंतर्गत कहा कि मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक अवस्थाएं आती हैं। बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था, युवा, प्रौढ़ और अंत में वृद्धावस्था भी होती है। उम्र के हिसाब से मनुष्य अपने-अपने कार्य करता है, जैसे खेलना, पढ़ाई करना, व्यापार करना, समाज सेवा आदि-आदि। कई-कई आदमी वृद्धावस्था में भी सक्रिय रूप से कार्य करते हैं। आगम में बताया गया कि साधु जीवन में 60 वर्ष की संपन्नता के बाद स्थविर हो जाता है।

मनुष्य को 70-75 वर्ष आ जाएं, उसके पश्चात वह किसी सभा-संस्था आदि में पद नहीं लेकर उसके संरक्षक की भूमिका में रह सकते हैं। वृद्धावस्था के आने के पश्चात मनुष्य को अपनी आत्मा के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। धर्म-ध्यान, साधना, जप, स्वाध्याय आदि में समय लगाना चाहिए।



भारती का साहित्य विभाग साहित्य का भंडार है, जहां कितने ग्रंथ, कितनी पुरानी पांडुलिपियां, हस्तलिखित लिपियां आज भी मौजूद हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से, साधना की दृष्टि से बहुत सुंदर जगह है, जहां मुमुक्षु बहनें, भाई, समणियां वहां रहकर स्वाध्याय करती हैं। जैन विश्व भारती के अंतर्गत आगम, जैन विद्या, सम्यक दर्शन कार्यशाला, परीक्षा, अध्ययन और अनेकों प्रकार की गतिविधियां निरंतर गतिमान हैं।

दीक्षांत समारोह के संदर्भ में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समण संस्कृति संकाय ज्ञानार्जन के साथ-साथ अध्यात्म विकास में भी सहायक है। संकाय के विभागाध्यक्ष मालचंद बैगानी, पुखराज डागा ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन विद्या पाठ्यक्रम से जुड़ी महिलाओं ने गीत का संगान किया। जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण द्वारा आगम मंथन प्रतियोगिता की प्रश्न पुस्तिका आचार्य प्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

इसके साथ ही खान-पान का भी विवेक रखें, संयमी रहें, आत्म कल्याण के लिए इस अवस्था में निवृत्ति की दिशा में आगे बढ़ें और धार्मिक प्रकृति में रहने का प्रयास करें।

गजसुकुमाल के आख्यान के पश्चात पूज्य प्रवर ने अनेकों तपस्वियों को

तपस्या का प्रत्याख्यान करवाया।

मुख्य प्रवचन के पश्चात् जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय के दीक्षांत समारोह में फरमाया कि जैन विद्या के प्रसार का जो कार्य वर्षों पहले आत्मबोध के नाम से तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित किया जाता था वह कार्य

वर्तमान में जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय विभाग के द्वारा किया जा रहा है। इसमें उम्र की कोई सीमा नहीं है, चाहे कोई 20 वर्ष का हो या 70 वर्ष का। इससे व्यक्ति का स्वाध्याय बढ़ता है, स्वाध्याय कर जैन विद्या की परीक्षा दी जा सकती है। जैन विश्व

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

